

 **AstroSage**

World's No. 1 Astrology Portal & App

कीमत: ~~\$ 10~~ मुफ्त

अवकहडा चक्र

पाया (नक्षत्र आधारित)	चाँदी
वर्ण	ब्राह्मण
योनी	विलाव
गण	देव
वश्य	जलचर
नाड़ी	आदि
दशा भोग्य	Xq: 1 O 9 Ek 22 Fn
लग्न	मिथुन
लग्न स्वामी	बुध
राशि	कर्क
राशि स्वामी	चंद्र
नक्षत्र-पद	पुनर्वसु 4
नक्षत्र स्वामी	गुरु
जुलियन दिन	2451346
सूर्य राशि (हिन्दू)	मिथुन
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मिथुन
अयनांश	023.50.56
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.22
साम्पातिक काल	00.24.41

अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	7
शुभ अंक	1, 2, 3, 9
अशुभ अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	16, 25, 34, 43, 52
भाग्यशाली दिन	रवि, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, बुध, मंगल
मित्र राशियां	मिथुन, कन्या, तुला
शुभ लग्न	मकर, मेष, मिथुन, सिंह
भाग्यशाली धातु	चाँदी
भाग्यशाली रत्न	मोती

व्यक्ति विवरण

लिंग	Male
दिनांक	16 : 6 : 1999
समय	6 : 25 : 0
दिन	बुधवार
इष्टकाल	003-58-25
जन्म स्थान	Ranaghat
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	23 : 10 : N
रेखांश	88 : 34 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:24:15
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	6:49:16
जन्म समय - जीएमटी	0:55:0
तिथि	तृतिया
हिन्दू दिन	बुधवार
पक्ष	शुक्ल
योग	ध्रुव
करण	गर
सूर्योदय	04:49:37
सूर्यास्त	18:22:53
दिन अवधि	13:33:15

घटक (अशुभ)

दिन	बुधवार
करण	नाग
लग्न	तुला
माह	पौष
नक्षत्र	अनुराधा
प्रहर	1
राशि	सिंह
तिथि	2, 7, 12
योग	धृति
ग्रह	गुरु

विवाह विशेषज्ञ ज्योतिषियों से करें बात



पहली कॉल / चैट सिर्फ ₹1 में

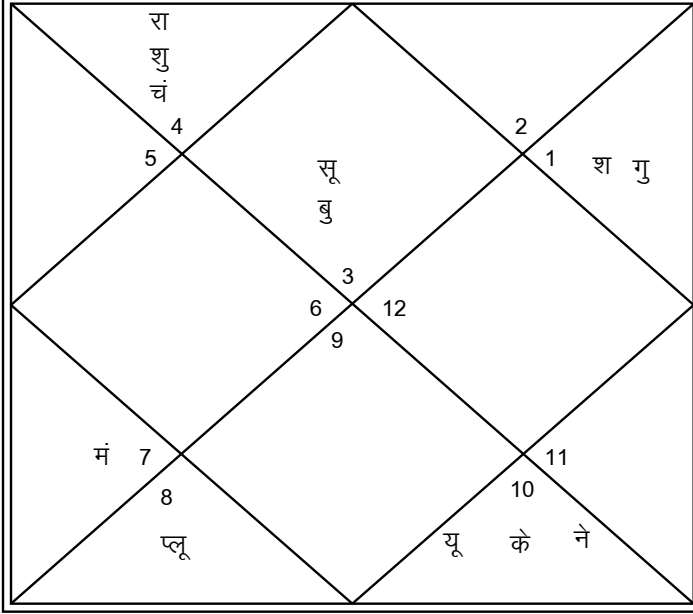
अभी करें कॉल



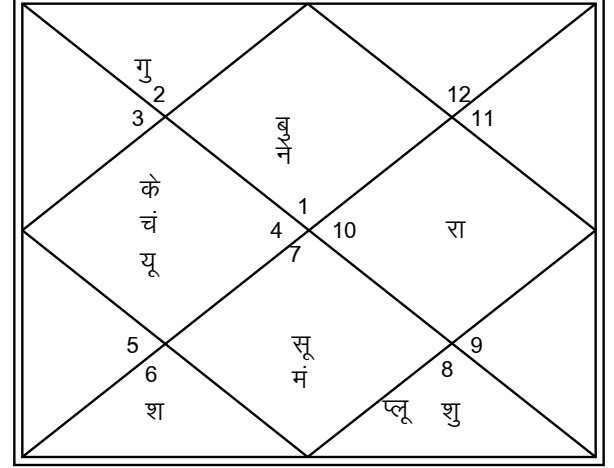
पारम्परिक

नाम	Kaushik Biswas	जुलियन दिन	2451346	लग्न स्वामी	बुध	दशा भोग्य	Xq: 1 O 9 Ek 22 Fn
लिंग	M	अयनांश नाम	लाहिरी	लग्न	मिथुन	करण	गर
दिनांक	16.6.1999	अयनांश	023.50.56	योग	ध्रुव	नक्षत्र स्वामी	गुरु
दिन	बुधवार	जन्म स्थान	Ranaghat	तिथि	तृतिया	नक्षत्र-पद	पुनर्वसु-4
समय	6.25.0	रेखांश	88.34.E	सूर्यास्त	18.22.53	राशि स्वामी	चंद्र
साम्पातिक काल	00.24.41	अक्षांश	23.10.N	सूर्योदय	04.49.37	राशि	कर्क

लग्न चक्र



नवमांश चक्र



विंशोत्तरी दशा

गुरु -16 वर्ष 16/ 6/99 से 8/ 4/01			
गुरु	00/00/00		
शनि	00/00/00		
बुध	00/00/00		
केतु	00/00/00		
शुक्र	00/00/00		
सूर्य	00/00/00		
चंद्र	00/00/00		
मंगल	00/00/00		
राहु	8/4/01		

शनि -19 वर्ष 8/ 4/01 से 8/ 4/20			
शनि	11/4/04		
बुध	20/12/06		
केतु	29/1/08		
शुक्र	29/3/11		
सूर्य	11/3/12		
चंद्र	11/10/13		
मंगल	20/11/14		
राहु	26/9/17		
गुरु	8/4/20		

बुध -17 वर्ष 8/ 4/20 से 8/ 4/37			
बुध	5/9/22		
केतु	2/9/23		
शुक्र	2/7/26		
सूर्य	8/5/27		
चंद्र	8/10/28		
मंगल	5/10/29		
राहु	23/4/32		
गुरु	29/7/34		
शनि	8/4/37		

केतु -7 वर्ष 8/ 4/37 से 8/ 4/44			
केतु	5/9/37		
शुक्र	5/11/38		
सूर्य	11/3/39		
चंद्र	11/10/39		
मंगल	8/3/40		
राहु	26/3/41		
गुरु	2/3/42		
शनि	11/4/43		
बुध	8/4/44		

शुक्र -20 वर्ष 8/ 4/44 से 8/ 4/64			
शुक्र	8/8/47		
सूर्य	8/8/48		
चंद्र	8/4/50		
मंगल	8/6/51		
राहु	8/6/54		
गुरु	8/2/57		
शनि	8/4/60		
बुध	8/2/63		
केतु	8/4/64		

सूर्य -6 वर्ष 8/ 4/64 से 8/ 4/70			
सूर्य	26/7/64		
चंद्र	26/1/65		
मंगल	2/6/65		
राहु	26/4/66		
गुरु	14/2/67		
शनि	26/1/68		
बुध	2/12/68		
केतु	8/4/69		
शुक्र	8/4/70		

चंद्र -10 वर्ष 8/ 4/70 से 8/ 4/80			
चंद्र	8/2/71		
मंगल	8/9/71		
राहु	8/3/73		
गुरु	8/7/74		
शनि	8/2/76		
बुध	8/7/77		
केतु	8/2/78		
शुक्र	8/10/79		
सूर्य	8/4/80		

मंगल -7 वर्ष 8/ 4/80 से 8/ 4/87			
मंगल	5/9/80		
राहु	23/9/81		
गुरु	29/8/82		
शनि	8/10/83		
बुध	5/10/84		
केतु	2/3/85		
शुक्र	2/5/86		
सूर्य	8/9/86		
चंद्र	8/4/87		

राहु -18 वर्ष 8/ 4/87 से 8/ 4/05			
राहु	20/12/89		
गुरु	14/5/92		
शनि	20/3/95		
बुध	8/10/97		
केतु	26/10/98		
शुक्र	26/10/01		
सूर्य	20/9/02		
चंद्र	20/3/04		
मंगल	8/4/05		

ग्रह स्थिति				
ग्रह	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	मिथुन	21.17.00	पुनर्वसु	1
सूर्य	मिथुन	00.38.00	मृगशिरा	3
चंद्र	कर्क	01.49.28	पुनर्वसु	4
मंगल	तुला	01.29.43	चित्रा	3
बुध	मिथुन	22.02.38	पुनर्वसु	1
गुरु	मेष	04.02.58	अश्विनी	2
शुक्र	कर्क	15.54.27	पुष्य	4
शनि	मेष	18.53.03	भरणी	2
राहु (व)	कर्क	21.45.12	आश्लेषा	2
केतु (व)	मकर	21.45.12	श्रवण	4
सूर्य (व)	मकर	22.47.03	श्रवण	4
नैप (व)	मकर	10.02.04	श्रवण	1
प्लू (व)	वृश्चिक	14.46.17	अनुराधा	4

अष्टकवर्ग तालिका												
राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	6	5	3	3	4	4	3	4	5	4	4	3
चंद्र	6	2	3	3	5	4	3	5	4	5	3	6
मंगल	5	3	2	2	4	2	4	5	3	3	3	3
बुध	6	6	3	4	4	3	6	7	2	3	6	4
गुरु	6	4	5	5	5	4	4	6	3	4	4	6
शुक्र	4	3	4	4	7	4	4	5	3	4	7	3
शनि	3	3	4	2	4	6	0	2	4	2	4	5
योग	36	26	24	23	33	27	24	34	24	25	31	30

चलित तालिका				
भाव	राशि	भाव आरंभ	राशि	भाव मध्य
1	मिथुन	04.52.54	मिथुन	21.17.00
2	कर्क	04.52.54	कर्क	18.28.48
3	सिंह	02.04.42	सिंह	15.40.36
4	सिंह	29.16.30	कन्या	12.52.24
5	कन्या	29.16.30	तुला	15.40.36
6	वृश्चिक	02.04.42	वृश्चिक	18.28.48
7	धनु	04.52.54	धनु	21.17.00
8	मकर	04.52.54	मकर	18.28.48
9	कुंभ	02.04.42	कुंभ	15.40.36
10	कुंभ	29.16.30	मीन	12.52.24
11	मीन	29.16.30	मेष	15.40.36
12	वृषभ	02.04.42	वृषभ	18.28.48

॥ आपका लग्न ॥

लग्न क्या है –

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितिज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पड़ती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **मिथुन**

स्वास्थ्य मिथुन लग्न के लिए:

मिथुन लग्न के प्रभाव से आपमें कभी कभी घबराहट, निराशावाद, दबूपन और अधीरता की प्रवृत्ति आ सकती है। तथा क्षय रोग, दमा और एनीमिया जैसे रोग आपकी समस्याएं बन सकते हैं। साथ ही तंत्रिका तंत्र और श्वास से संबंधित, खासकर सुनने की समस्या आप पर प्रभावी हो सकती है। श्वास संबंधी समस्या और कई तरह की घबराहट की समस्या आपको आमतौर पर दिक्कत दे सकती है।

स्वभाव व व्यक्तित्व मिथुन लग्न के लिए:

मिथुन लग्न के प्रभाव क्षेत्र में आने के कारण आप बहुत ही लुभावने, आकर्षक और मृदुभाषी होंगे। साथ ही आपके शारिरिक और मानसिक तौर पर काफी मजबूत प्रकृति के होने की सम्भावना बन रही है। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है की आप अपनी आयु से छोटे प्रतीत होते हैं। आपमें कुछ नया करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। आप किसी एक विचार पर स्थिर नहीं रह पाते हैं और जल्द ही अपने कामों से ऊब जाते हैं। यही कारण है की आप लम्बे समय तक किसी एक मसले पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। आप लोगों में अपने फायदे के लिए दूसरों को इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। चूंकि आपका मन लगातार बदलता रहता है इसलिए आप पर भरोसा करना खतरनाक होता है। आपकी राशि के लोग बौद्धिक बातों को अधिक महत्व देते हैं, आपके लिए संचार का काफी महत्व होता है। इसलिए आप ज्ञान को जमा करने की पूंजी नहीं मानते। सभी सौर राशियों में मिथुन राशि बहुत बहुमुखी प्रतिभा वाली राशि मानी जाती है। आप जब किसी एक मुद्दे पर निर्णय लेते हैं तो अगले ही क्षण उसे बदल देते हैं। आपकी लग्न के लोग खुले विचार और अधिक जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। आपने शायद ही कभी किसी लक्ष्य पर गहराई से सोचा हो और हर प्रकार के षड़यंत्रों से आप दूर रहते हैं। साथ ही आप स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं।

शारीरिक रूप-रंग मिथुन लग्न के लिए:

मिथुन लग्न के लोग चमकदार आँखें और अपनी बातों से लुभाने वाले होते हैं। आप लोग दुबले कद काठी के, औसत लंबी ऊंचाई वाले होते हैं। आप कई बार माडल्स की तरह आकर्षक नजर आते हैं। गोरे रंग, छोटे टोढी, सुन्दर चेहरे, और घुंघरीले बाल से आपका व्यक्तित्व काफी लुभावना लगता है। आपका ललाट चौड़ा होता है और आंखें भी सुंदर दिखाई देती हैं। लेकिन आकर्षक व्यक्तित्व होने का बावजूद आपको रोग और स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है।



ज्योतिषीय परामर्श लें
हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषियों से

अभी परामर्श लें >

॥ नक्षत्र फल ॥

हिन्दू ज्योतिष में नक्षत्रों का विशेष महत्व है। आकाश को यदि 27 (कभी-कभी 28) बराबर भागों में विभाजित किया जाए, तो प्रत्येक भाग एक नक्षत्र कहलाता है। हर नक्षत्र को बराबर-बराबर चार पदों में भी विभाजित किया गया है। ज्योतिष की अवधारणा के अनुसार हर पद एक अक्षर को इंगित करता है। प्रायः किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा जिस पद में होता है, उससे जुड़े अक्षर से उस व्यक्ति का नाम रखा जाता है।

आपका नक्षत्र रिपोर्ट : पुनर्वसु

आपका नक्षत्र चरण : 4

पुनर्वसु नक्षत्र फल : आप सदाचारी, सहनशील और संतोषी स्वभाव के हैं। “सादा जीवन, उच्च विचार” वाली कहावत आप पर हूबहू लागू होती है। ईश्वर पर आपकी अगाध आस्था है और आप परम्पराप्रिय हैं। पुरातन विचारधाराओं व मान्यताओं में आपका दृढ़ विश्वास है। धन संचय करना आपकी आदत नहीं है मगर जीवन में मान-सम्मान आपको जरूर मिलेगा। आपकी मासूमियत और साफगोई आपको लोकप्रिय बनाती है। जरूरतमंदों की सहायता के लिए आप हमेशा खड़े रहेंगे। अवैध या अनैतिक कार्यों का आप जमकर विरोध करते हैं। बुरे विचार और बुरे लोगों की संगति से तो आप कोसों दूर रहते हैं, क्योंकि ऐसे लोगों से मित्रता आपके आध्यात्मिक विकास में बाधा डालती है। आपका मन और मस्तिष्क हमेशा संतुलित रहता है। दूसरों को सुख देने की प्रवृत्ति व किसी की मदद करना या सहयोग देना आपका विशेष गुण है। सौम्य स्वभाव, दयालु और परोपकारी प्रवृत्ति तो आपके गुणों में चार चांद लगा देती है। आप शांत, धीर-गंभीर, आस्थावान, सत्य व न्यायप्रिय तथा अनुशासनप्रिय जीवन जीने वाले हैं और आपकी व्यवहार-कुशलता और अटूट मैत्री तो लोकप्रिय है। व्यर्थ के जोखिम उठाने से आप हमेशा बचते हैं और अगर कोई मुसीबत या समस्या आपके सामने आती है तो वह ईश्वरीय कृपा से जल्दी दूर हो जाती है। अपने परिवार से आप बहुत प्यार करते हैं और अपने या समाज के कल्याण हेतु बड़ी यात्राएँ करने से भी नहीं झिझकते हैं। जिस तरह एक कुशल धनुर्धारी अपने लक्ष्य को भेदने में सफल होता है उसी तरह आप भी अपनी एकाग्रता से मुश्किल-से-मुश्किल लक्ष्य को पा लेते हैं। चाहे आपको कितनी बार भी असफलता का सामना करना पड़े, परन्तु आप अपनी मंजिल को पाने के लिए डटे रहते हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं और हर काम को बड़े सलीके से पूरा करते हैं इसलिए किसी भी क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। अध्यापन का क्षेत्र हो अथवा अभिनय का, लेखन का हो या चिकित्सा कादृआप सर्वत्र यशस्वी होंगे। माता-पिता, गुरुजन का आप बहुत आदर करते हैं। आप शांतिप्रिय और तार्किक प्रवृत्ति के होंगे तथा सबका सम्मान करने वाले और निष्कपट स्वभाव की होंगे। आपके बच्चे भी अच्छा व्यवहार करने वाले होंगे।

शिक्षा और आय : आप शिक्षक, लेखक, अभिनेता, चिकित्सक आदि के रूप में नाम और मान अर्जित कर सकते हैं। ज्योतिष साहित्य के रचयिता, योग-शिक्षक, यात्रा व पर्यटन विभाग, होटल-रेस्तराँ से सम्बंधित कार्य, मनोवैज्ञानिक, धर्म गुरु, पंडित, पुरोहित, विदेश व्यापार, प्राचीन व दुर्लभ वस्तुओं के विक्रेता, पशुपालन, रेडियो, टेलीविजन व दूरसंचार से जुड़े कार्य, डाक व कूरिअर सेवा, समाजसेवी आदि कार्य करके आप सफल जीवन जी सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : आप माता-पिता के बहुत आज़ाकारी होंगे और गुरुओं और शिक्षकों का भी खूब सम्मान करेंगे। आपके वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएँ रह सकती हैं, अतः यदि आप जीवनसाथी से तालमेल बनाकर चलें तो उत्तम होगा। जीवनसाथी को मानसिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ परेशान कर सकती हैं, परन्तु उनमें अच्छे गुण भी कूट-कूट के भरे हैं और उनका स्वरूप मनोहारी है। वे बड़े-बूढ़ों का भी सम्मान करने वाले होंगे। बच्चों और परिवार की देखभाल करने में वह निपुण होंगे।

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

चरित्र:

आप एक ऊर्जावान व्यक्ति हैं और तब तक संतुष्ट नहीं होते जब तक क्रियाशील न हों। आप मानसिक एवं शारीरिक रूप से शक्तिशाली एवं काम के लिये उत्साह से भरपूर हैं। आपके अन्दर असीम साहस है एवं यह सभी गुण आपके जीवन को बहुआयामी बनाते हैं। आप एक जगह ही सिर्फ इसलिये ही नहीं रुक सकते क्योंकि आपने उस दिशा में कार्य प्रारम्भ किया था। अगर आपको सही लगता है तो आप अपना काम, मित्र, रुचियां या कुछ भी बदलने में नहीं हिचकिचाते। दुर्भाग्यवश आप परिवर्तन के सभी पहलुओं का अध्ययन नहीं कर पाते और यह जल्दबाजी आपको प्रायः मुसीबत में डालती है। फिर भी आपके अन्दर साहस है, आप जन्मजात रूप से मुसीबतों से लड़ने वाले हैं। यह सब मिलाकर आपको अन्त में सफलता दिलाते हैं। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि जीवन में आपको असीम धन की प्राप्ति होगी परन्तु धन केवल तभी उपयोगी होता है जब वह आपको सुख दिला सके और उस सुख से आप जीवन का सम्पूर्ण आनन्द ले सकें। यह मानने के अनेक कारण हैं कि आप जगह-जगह की सैर करेंगे और सम्भवतः अत्यधिक विश्व भ्रमण करेंगे। आपको देश के विभिन्न हिस्सों में पद प्राप्त होंगे। आपको अपने व्यवसाय के कारण भ्रमण अधिक करना पड़ेगा। हमारी सलाह है कि आपको अपने अन्दर धैर्य विकसित करने का प्रयास करना चाहिये और आपको किसी भी नये व्यवसाय को प्रारम्भ करने से पहले उस पर होने वाले खर्च का पूरा अध्ययन कर लेना चाहिये। यह कुछ छोटी बातें हैं परन्तु आपकी सफलता को खराब कर सकते हैं। साथ ही, परिवर्तन से बचें खासकर की 35 की उम्र के बाद।

सौभाग्य व संतुष्टि:

आपको ईश्वर ने अत्युत्तम व्यावहारिक ज्ञान और अपनी आवश्यकता के प्रति स्पष्ट नजरिया दिया है। आप तार्किक एवं व्यावहारिक हैं। आप वातावरण में खुशहाली खोजते हैं और अपने विचार-क्षितिज को व्यापक बनाने से डरते नहीं हैं। आप भय को पहचानकर उसे दूर करने के रास्ते खोज लेते हैं। कृपया ध्यान रखें कि यदि आप सिर्फ अपने बारे में सोचेंगे, तो आपकी सफलता की संभावना बहुत कम होगी।

जीवन शैली:

आपको ऐसा लगता है कि जब आपके पास धन और भौतिक ऐश्वर्य होगा तभी लोग आपका सम्मान करेंगे। किन्तु यह सत्य नहीं है, अतः आप वही कार्य करें जो आप करना चाहते हैं।

क्या आपकी कुंडली में राज योग है?

अभी खरीदें >



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रोजगार:

आप कार्यालय की राजनीति से दूर रहना पसन्द करते हैं और पद के लिये लड़ना आपको पसन्द नहीं है। ऐसी स्थितियां होंगी जहां आप अकेले एवं अपनी पसन्द का कार्य अपनी गति से कर सकें। जैसे लेखन, चित्रकारी और कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग इत्यादि।

व्यवसाय:

ऐसे कई पारितोषिक कार्यक्षेत्र हैं, जहां पर आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे कई सारे कार्यक्षेत्र हैं जहां पर मौलिकता आवश्यक है और जो पुरुष एवं स्त्री पर समान रूप से लागू होते हैं, वे सभी आपके स्वभाव के अनुरूप हैं। यही गुण यदि दूसरी दिशा में उपयोग किये जाएं, तो व्यवस्था सम्बन्धी कार्यक्षेत्र में उपयोगी हो सकते हैं। इस तरह बड़े व्यापारिक संस्थानों के नेतृत्व के लिये आप उपयुक्त हैं। ऐसे कार्यक्षेत्र जहां पर निरन्तर एक जैसा कार्य करना पड़ता है, उनसे आपको बचना चाहिए। ऐसे कार्यक्षेत्र आपके लिये उपयुक्त नहीं हैं।

स्वास्थ्य:

आपके अन्दर प्रचुर ऊर्जा है। आप हृष्ट-पुष्ट हैं व साधारणतः आप किसी प्रकार के रोग से ग्रसित नहीं होंगे, जब तक कि आप जरूरत से बहुत ज्यादा कार्य नहीं करते। सिर्फ इसलिये कि आप मोमबत्ती को दोनों सिरों से जला सकते हैं, आपको यह करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। आपको अपने प्रति संयमी होना चाहिए और अपने स्वास्थ्य-कोष में से जरूरत से ज्यादा लेने का प्रयास नहीं करना चाहिए अन्यथा आप जीवन के उत्तरार्ध में गम्भीर बीमारियों को निमन्त्रण दे सकते हैं। बीमारी यदि प्रायः नहीं आती है, तो अचानक ही आएगी। यद्यपि उसने परिपक्व होने में काफी लम्बा समय लिया होगा। आप थोड़ा सा दिमाग लगाने पर पाएंगे कि आपने रोग को स्वयं ही आमन्त्रित किया है। इसमें कोई शक नहीं है कि आप उससे बच सकते थे। आपके नेत्र आपकी कमजोरी हैं और कृपया उसका ख्याल रखें। आप पैंतीस की उम्र के बाद नेत्र-विकार से ग्रसित हो सकते हैं।

विवाह विशेषज्ञ ज्योतिषियों से करें बात



पहली कॉल / चैट सिर्फ ₹ 1 में

अभी करें कॉल

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रुचि:

समय व्यतीत करने के ऊर्जावान तरीके आपको आकर्षित करते हैं और वो आपका सर्वाधिक भला भी करते हैं। तीव्र खेल जैसे फुटबॉल और टेनिस इत्यादि आपकी ऊर्जा के उपयोग के लिये बेहतरीन खेल हैं और आप इसके पूर्णतः अनुकूल हैं। आप मध्य आयु में सैर करना पसन्द करेंगे, लेकिन आप चार की जगह चौदह मील की सोचेंगे। अवकाश काल में आप हाथ में समाचार पत्र लिये बैंच पर बैठकर सिर्फ भोजन की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। सबसे दूरस्थ पहाड़ियां आपको आकर्षित करती हैं और आप यह जानना चाहते हैं कि वे पास से कैसी दिखती हैं।

प्रेम आदि:

आप मैत्रीपूर्ण स्वभाव के हैं और अपनी मित्र मण्डली को खुशहाली के तौर पर देखते हैं। इन्हीं मित्रों में से एक ऐसा होगा, जो आपके लिये सब कुछ होगा और यही वह होगा जिससे आप विवाह करेंगे। आपका स्वभाव सहानुभूतिपूर्ण है। साथ ही साथ यह कहने के अनेक कारण हैं कि आपका वैवाहिक जीवन सुखद होगा। आप ऐसे व्यक्ति हैं, जोकि अपने घर व उसमें उपस्थित वस्तुओं के बारे में अत्यधिक सोचते हैं और आप इसे आरामदायक एवं स्वच्छ होने की उम्मीद करते हैं। घर में अव्यस्तता आपको बिल्कुल नहीं भाती है। आपके बच्चे आपके लिये बहुत कुछ हैं। आप उनके लिये कार्य करेंगे और आप उन्हें बेहतरीन शिक्षा तथा आनन्द देने का प्रयास करेंगे, जो कि अन्त में बेकार नहीं जाएगा।

वित्त:

आप वित्तीय मामलों में भाग्यशाली हैं, लेकिन विलासपूर्ण और खर्चीले जीवनशैली में लिप्त हैं। आप बड़े जोखिम उठाएंगे या व्यापार को बड़े पैमाने पर करेंगे। परन्तु साधारण तौर पर आप काफी सफल रहेंगे। सम्भवतः आप एक उद्योगपति होंगे। सभी प्रकार के आर्थिक मामलों में आप ज्यादा भाग्यशाली रहेंगे, उदाहरणार्थ आपको वसीयत में अचल सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। आप प्रेम सम्बन्धों में भी भाग्यशाली होंगे। आप विवाह से भी धन प्राप्त कर सकते हैं या फिर आप इसे अपने दिमाग से बनाएंगे। लेकिन एक बात निश्चित है, कि आप एक धनाढ्य व्यक्ति बनेंगे।

2021 सुपर सेल

वार्षिक राशिफल 2021

नए साल की सटीक भविष्यवाणी

अभी आर्डर करें

वार्षिक कुंडली 2021
आपका भविष्य
AstroSage

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

शिक्षा:

आप एक ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी हैं जो सबसे अलग है। आप औरों लोगों से हटकर अपने जीवन को अलग तरीके से जीते हैं और जब बात आपकी शिक्षा की आती है तब भी आप ऐसा ही करते हैं। आप कई बार जल्दबाजी में भी बहुत चीजें सीखना चाहते हैं जो बाद में आपको परेशान करती हैं। हालांकि आपकी लेखन क्षमता बेहतर हो सकती है और आप लिखने में आनंद महसूस कर सकते हैं। आप अपनी गलतियों से सीखना पसंद करते हैं और सहजता से किसी भी कार्य में अपना सब कुछ लगा देते हैं। अपनी इसी विशेषता को आपको शिक्षा के क्षेत्र में भी लगाना चाहिए। कभी-कभी अपनी ही गलतियों के कारण आपको परेशानी उठानी पड़ सकती है और इसी वजह से आप की पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। आपको जीवन के अनुभवों से सीखने में आनंद आता है और यही बात आपको शिक्षा के क्षेत्र में छोटी-छोटी बातों से सीखने में सफलता देती है। आपके लिए आवश्यक है कि आप जो कुछ भी सीखते हैं उसे एक बार पुनः दोहराएँ ताकि वह आपकी स्मृतियों में अंकित हो जाए। शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ का सामना करने के बाद ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

॥ मंगलदोष विवेचन ॥

सामान्यतः मंगल दोष जन्म-कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से पंचम भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से चतुर्थ भाव में है।

अतः मंगल दोषलग्न कुण्डली में उपस्थित नहीं है परन्तु चंद्र कुण्डली में उपस्थित है।

ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खड़ी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)

कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)

- 1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
- 2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- 3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।

- 1) चिड़ियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
- 2) घर पर हाथी-दांत रखें।
- 3) बरगद के पेड़ की पूजा मीठे दूध से करें

नोट: हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।



शनि संबंधित सभी समस्याओं का संपूर्ण समाधान

शनि रिपोर्ट

अभी खरीदें



॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

नाम	Kaushik Biswas
दिनांक	16/6/1999
समय	6:25:0
जन्म स्थान	Ranaghat
लिंग	Male
राशि	कर्क
तिथि	तृतिया
नक्षत्र	पुनर्वसु

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	साढे साती	मिथुन	जुलाई 23, 2002	जनवरी 08, 2003	उदय
2	साढे साती	मिथुन	अप्रैल 08, 2003	सितम्बर 05, 2004	उदय
3	साढे साती	कर्क	सितम्बर 06, 2004	जनवरी 13, 2005	शिखर
4	साढे साती	मिथुन	जनवरी 14, 2005	मई 25, 2005	उदय
5	साढे साती	कर्क	मई 26, 2005	अक्टूबर 31, 2006	शिखर
6	साढे साती	सिंह	नवम्बर 01, 2006	जनवरी 10, 2007	अस्त
7	साढे साती	कर्क	जनवरी 11, 2007	जुलाई 15, 2007	शिखर
8	साढे साती	सिंह	जुलाई 16, 2007	सितम्बर 09, 2009	अस्त
9	छोटी पनौती	तुला	नवम्बर 15, 2011	मई 15, 2012	
10	छोटी पनौती	तुला	अगस्त 04, 2012	नवम्बर 02, 2014	
11	छोटी पनौती	कुंभ	अप्रैल 29, 2022	जुलाई 12, 2022	

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	छोटी पनौती	कुंभ	जनवरी 18, 2023	मार्च 29, 2025	
13	साढे साती	मिथुन	मई 31, 2032	जुलाई 12, 2034	उदय
14	साढे साती	कर्क	जुलाई 13, 2034	अगस्त 27, 2036	शिखर
15	साढे साती	सिंह	अगस्त 28, 2036	अक्टूबर 22, 2038	अस्त
16	साढे साती	सिंह	अप्रैल 06, 2039	जुलाई 12, 2039	अस्त
17	छोटी पनौती	तुला	जनवरी 28, 2041	फरवरी 05, 2041	
18	छोटी पनौती	तुला	सितम्बर 26, 2041	दिसम्बर 11, 2043	
19	छोटी पनौती	तुला	जून 23, 2044	अगस्त 29, 2044	
20	छोटी पनौती	कुंभ	फरवरी 25, 2052	मई 14, 2054	
21	छोटी पनौती	कुंभ	सितम्बर 02, 2054	फरवरी 05, 2055	
22	साढे साती	मिथुन	जुलाई 11, 2061	फरवरी 13, 2062	उदय
23	साढे साती	मिथुन	मार्च 07, 2062	अगस्त 23, 2063	उदय
24	साढे साती	कर्क	अगस्त 24, 2063	फरवरी 05, 2064	शिखर
25	साढे साती	मिथुन	फरवरी 06, 2064	मई 09, 2064	उदय
26	साढे साती	कर्क	मई 10, 2064	अक्टूबर 12, 2065	शिखर
27	साढे साती	सिंह	अक्टूबर 13, 2065	फरवरी 03, 2066	अस्त
28	साढे साती	कर्क	फरवरी 04, 2066	जुलाई 02, 2066	शिखर
29	साढे साती	सिंह	जुलाई 03, 2066	अगस्त 29, 2068	अस्त

॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढ़े साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	छोटी पनौती	तुला	नवम्बर 05, 2070	फरवरी 05, 2073	
31	छोटी पनौती	तुला	मार्च 31, 2073	अक्टूबर 23, 2073	
32	छोटी पनौती	कुंभ	अप्रैल 12, 2081	अगस्त 02, 2081	
33	छोटी पनौती	कुंभ	जनवरी 07, 2082	मार्च 19, 2084	
34	साढ़े साती	मिथुन	सितम्बर 19, 2090	अक्टूबर 24, 2090	उदय
35	साढ़े साती	मिथुन	मई 21, 2091	जुलाई 02, 2093	उदय
36	साढ़े साती	कर्क	जुलाई 03, 2093	अगस्त 18, 2095	शिखर
37	साढ़े साती	सिंह	अगस्त 19, 2095	अक्टूबर 11, 2097	अस्त
38	साढ़े साती	सिंह	मई 03, 2098	जून 19, 2098	अस्त
39	छोटी पनौती	तुला	दिसम्बर 26, 2099	मार्च 17, 2100	
40	छोटी पनौती	तुला	सितम्बर 17, 2100	दिसम्बर 02, 2102	
41	छोटी पनौती	कुंभ	फरवरी 17, 2111	मई 02, 2113	
42	छोटी पनौती	कुंभ	सितम्बर 22, 2113	जनवरी 25, 2114	



बृहत् कुंडली

अब तक की सबसे विस्तृत कुंडली

250+ पृष्ठ | ~~₹2100~~ ₹799 सिर्फ

अभी ऑर्डर करें

॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

शनि साढ़े साती: उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बड़े आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कड़ी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बड़ा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढ़े साती: शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य-संबंधी समस्या, चरित्र-हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा-तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पड़ सकता है। संभव है कि इस काल-खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घड़ी से निकाल सकता है।

शनि साढ़े साती: अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई-लिखाई पर थोड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे-धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल-खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाड़ी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली-भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोट: उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है और हम पाठकों से यह आलेख पढ़ने का अनुरोध करते हैं। सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

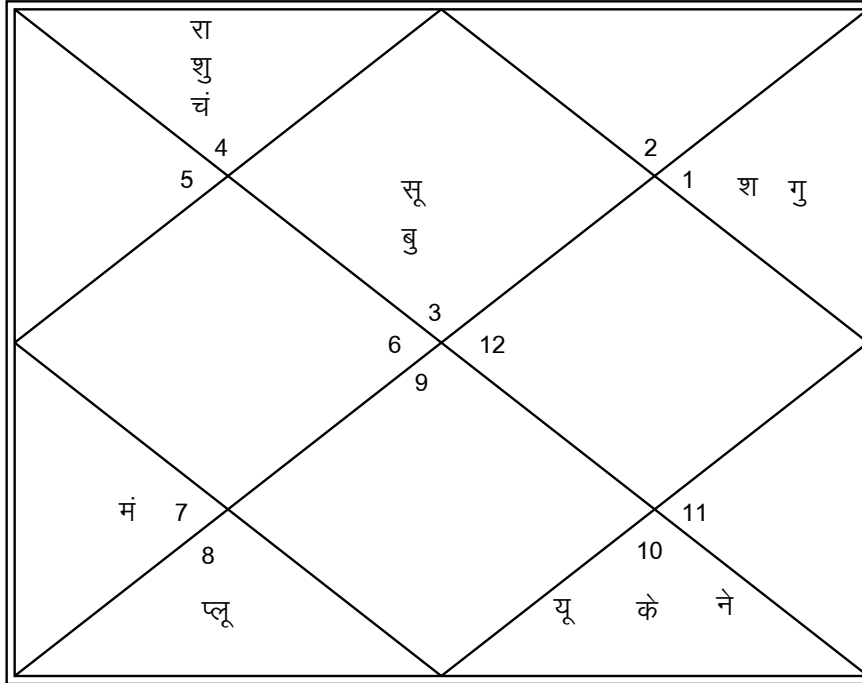
॥ कालसर्प दोष ॥

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थिति को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर है। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतः मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग-अलग जातकों पर अलग-अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पड़ता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन-किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषयोग का असर पड़ता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणाम: आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

लग्न चक्र:



ज्योतिषीय परामर्श लें

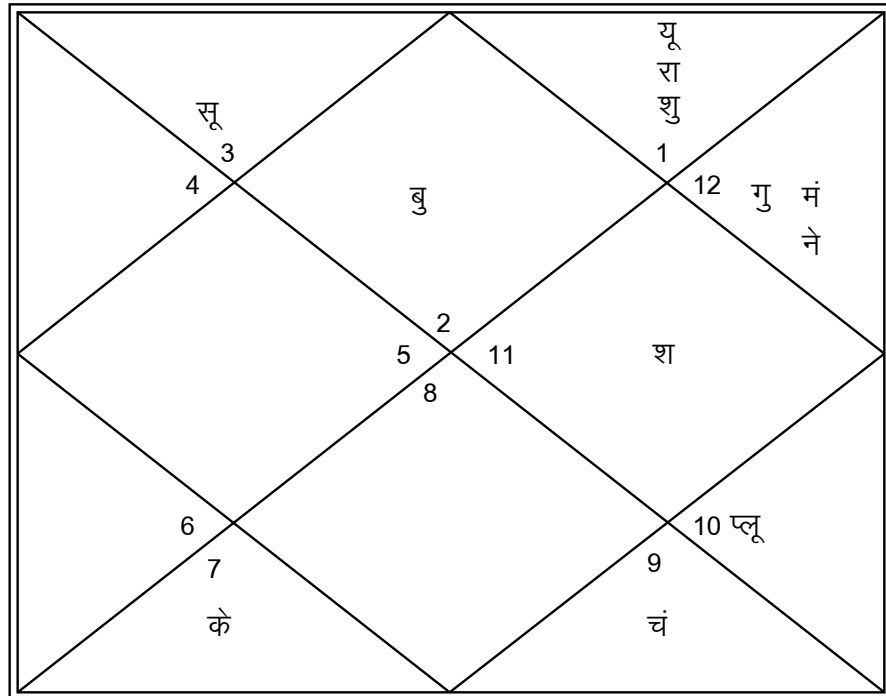
हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषियों से

अभी परामर्श लें >

॥ वर्षफल विवरण ॥

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
16 / 6 / 1999	जन्म दिनांक	16 / 6 / 2022
6:25:0	जन्म समय	3:55:50
बुधवार	जन्म दिन	बुधवार
Ranaghat	जन्म स्थान	Ranaghat
23	अक्षांश	23
88	रेखांश	88
00 : 24 : 15	स्थानीय समय संशोधन	00 : 24 : 15
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
06 : 49 : 16	स्थानीय औसत समय	04 : 20 : 05
04 : 49 : 37	सूर्योदय	04 : 49 : 44
18 : 22 : 53	सूर्यास्त	18 : 23 : 03
मिथुन	लग्न	वृषभ
बुध	लग्नस्वामी	शुक्र
कर्क	राशि	धनु
चंद्र	राशि स्वामी	गुरु
पुनर्वसु	नक्षत्र	पूर्वाषाढा
गुरु	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
ध्रुव	योग	ब्रह्म
गर	करण	गर
मिथुन	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मिथुन
023-50-56	अयनांश	024-10-12
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली



॥ वर्षफल विवरण ॥

मुन्था: 1 भाव

यह एक अनुकूल स्थिति है। आपको बेहतर कैरियर संभावनाएं और चतुर्मुख उन्नति के अवसर मिलेंगे। अपने विरोधियों को परास्त करने में आप सक्षम होंगे। आपका मान बढ़ेगा। आपको बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त होगा और आर्थिक दृष्टि से आप अधिक समृद्ध होंगे।

जून 16, 2022 – जुलाई 04, 2022 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 2

घरेलु जीवन सुखद नहीं रहेगा तथा उस पर बहुत ध्यान देना पड़ेगा। यद्यपि आपकी शारीरिक तनाव और बोझ सहने की अच्छी क्षमता है लेकिन परिवार के झंझटों के कारण क्षमता से अधिक कष्ट भोगना पड़ सकता है। भारी आर्थिक हानियां होंगी और सम्पत्ती का क्षय होगा। धन संबंधी मामलों में काफी सचेत रहने की आवश्यकता है। आंखों और मुंह की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

जुलाई 04, 2022 – अगस्त 03, 2022 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 8

अपने प्रयत्नों में आपको निराशा मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी रहेंगी। अपने आपको किसी बड़े उद्यम से सम्बन्धित न कीजिये। यह जोखिम लेने का समय नहीं है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित रह सकते हैं। फालतु की यात्राओं से बचें।

अगस्त 03, 2022 – अगस्त 25, 2022 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 11

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आंकाक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढ़ोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

अगस्त 25, 2022 – अक्टूबर 18, 2022 दशा राहू

राहू भाव संख्या 12

इस अवधि में निवास स्थान या नौकरी का परिवर्तन संभावित है। भारी व्यय से आप व्यथित रहेंगे। अपने लोगों से ही झगड़े विवाद हो सकते हैं। यात्राएं थकाने वाली और सफलदायक नहीं रहेंगी। पारिवारिक सदस्य आपके प्रति उदासीन रहेंगे। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। दुष्ट मित्रों से सावधान रहें। वह आपकी प्रतिष्ठा पर आंच लायेंगे। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी चिन्ता का एक कारण रहेगा। अभी किसी यात्रा की योजना न बनाएं।

॥ वर्षफल विवरण ॥

अक्टूबर 18, 2022 – दिसम्बर 06, 2022 दशा गुरु

गुरु भाव संख्या 11

इस अवधि में आप काफी उत्साह सुख पूर्ण होंगे। यह समय बेहद अच्छा बीतेगा। विदेशियों या सुदूर स्थलों पर रहने वाले लोगों से आपके सम्बंधित सौमनस्यपूर्ण रहेंगे। नये उद्यमों के साथ आपके सम्बंध रहेंगे। भाई बहन भी इस अवधि में खुशहाल रहेंगे। यदि आप किसी प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में भाग ले रहें हैं तो अवश्य सफल होंगे। इस अवधि के दौरान आप समाधि इत्यादि में दिलचस्पी रखेंगे। आपकी स्पष्ट रूप से वृत्ति दार्शनिक रहेगी।

दिसम्बर 06, 2022 – फरवरी 02, 2023 दशा शनि

शनि भाव संख्या 10

अपना मनचाहा परिणाम पाने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। वैसे मोटे तौर पर परिणाम आशाजनक नहीं निकलेंगे लेकिन काम विलम्ब से पूरा होगा। इस अवधि में किसी काम में बड़ा परिवर्तन नहीं करना चाहिए। धैर्य की हर किया में बहुत आवश्यकता रहेगी। साथी का स्वास्थ्य आपको मानसिक रूप से चिन्तित रख सकता है। व्यापार नौकरी के सिलसिले में किए गए भ्रमण लाभकारी सिद्ध होंगे। जमीन की खरीद और किसी अच्छे समय करने के लिए मुल्यवी रखिए।

फरवरी 02, 2023 – मार्च 26, 2023 दशा बुध

बुध भाव संख्या 1

इस अवधि में आप अति सुखी रहेंगे। अपनी प्रतिभा योग्यता और निपुणता के बल पर अच्छे परिणाम प्राप्त करेंगे। महत्वपूर्ण विद्वानों के सम्पर्क में आयेंगे। आपका सम्मान होगा तथा ख्याति बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन संतोषप्रद रहेगा। अपनी महत्वाकांक्षाएं प्राप्त करने के लिये आप कड़ा प्रयत्न करेंगे। साधारण तौर पर आप सफल व्यक्ति समझे जायेंगे। यद्यपि काम का बोझ बहुत रहेगा और थकान होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

मार्च 26, 2023 – अप्रैल 16, 2023 दशा केतु

केतु भाव संख्या 6

व्यापार धन्धे में इस अवधि में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अगर नौकरी पेशा हैं तो नौकरी की हालतों में सुधार होगा। व्यापार के विस्तृत होने की संभावना है। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान हर क्षेत्र से आपको सम्मान मिलेगा। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। दुश्मनों की आपका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। अचानक यात्रा सौभाग्य वृद्धि करेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे प्रयास कर सौभाग्यकाल को पूरी तरह भुनाने के लिये यह श्रेयस्कर समय है।

अप्रैल 16, 2023 – जून 16, 2023 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 12

आप सुविधा और विलास के साधनों पर खर्च करेंगे। उच्च कोटि का वैवाहिक सुख भोगेंगे। फिर भी अच्छा होगा कि आप अपनी भोग वृत्ति पर अंकुश लगायें वरना आनन्द प्राप्त करने के बजाय परेशानी उठानी पड़ जायेगी। छोटी मोटी बीमारी परेशान करेगी। प्रणय संबंधों की गति धीमी रखें। विरोधी और प्रतिद्वन्दी नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। यद्यपि आप उनकी परवाह नहीं करेंगे फिर भी आप को सलाह दी जाती है कि ऐसा न करें। आर्थिक रूप से यह बुरा समय नहीं है पर खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार जन के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

गुरु महादशा फल (जन्म से अप्रैल 8, 2001)

गुरु मेष आपके एकादश भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप काफी उत्साह सुख पूर्ण होंगे। यह समय बेहद अच्छा बीतेगा। विदेशियों या सुदूर स्थलों पर रहने वाले लोगों से आपके सम्बंधित सौमनस्यपूर्ण रहेंगे। नये उद्यमों के साथ आपके सम्बंध रहेंगे। भाई बहन भी इस अवधि में खुशहाल रहेंगे। यदि आप किसी प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा में भाग ले रहें हैं तो अवश्य सफल होंगे। इस अवधि के दौरान आप समाधि इत्यादि में दिलचस्पी रखेंगे। आपकी स्पष्ट रूप से वृत्ति दार्शनिक रहेगी।

शनि महादशा फल (अप्रैल 8, 2001 से अप्रैल 8, 2020)

शनि मेष आपके एकादश भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपकी सारी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप नए उद्यम शुरू करेंगे। मित्रों और हितैषियों से खूब मदद मिलेगी। इस अवधि में व्यापार द्वारा आपको अच्छा खासा लाभ होना चाहिए। निकट संबंधी के बारे में कोई अच्छी खबर मिल सकती है। सुदूर प्रदेशों के निवासियों से आपके अच्छे संबंध कायम होंगे। भ्रमण उपयोगी रहेगा। प्रणय संबंधों के लिए भी यह समय अच्छा है। परिवारजनों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा रहेगा।

बुध महादशा फल (अप्रैल 8, 2020 से अप्रैल 8, 2037)

बुध मिथुन आपके प्रथम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप अति सुखी रहेंगे। अपनी प्रतिभा योग्यता और निपुणता के बल पर अच्छे परिणाम प्राप्त करेंगे। महत्वपूर्ण विद्वानों के सम्पर्क में आयेंगे। आपका सम्मान होगा तथा ख्याति बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन संतोषप्रद रहेगा। अपनी महत्वाकांक्षाएं प्राप्त करने के लिये आप कड़ा प्रयत्न करेंगे। साधारण तौर पर आप सफल व्यक्ति समझे जायेंगे। यद्यपि काम का बोझ बहुत रहेगा और थकान होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

केतु महादशा फल (अप्रैल 8, 2037 से अप्रैल 8, 2044)

केतु मकर आपके अष्टम भाव में स्थित है:

इस अवधि में अचानक लाभ होने की संभावना है। अगर वसीयत प्राप्त करने की संभावना है या आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक है तो आप उसे प्राप्त कर सकते हैं। आपका मन धार्मिक क्रियाकलापों की ओर झुका रहेगा। कुछ अतीन्द्रिय अनुभव भी प्राप्त कर सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौहार्दपूर्ण रहेगा। अचानक यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सम्मान में इजाफा होगा। छोटी मोटी बीमारियां मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। आप तीर्थाटन पर जा सकते हैं। कुल मिलाकर सुखी रहेंगे।

शुक्र महादशा फल (अप्रैल 8, 2044 से अप्रैल 8, 2064)

शुक्र कर्क आपके द्वितीय भाव में स्थित है:

परिवारजनों के साथ आप अच्छा निबाह कर सकेंगे। आप परिस्थितियों का बड़ी चतुरता से सामना करेंगे। आय में वृद्धि होनी चाहिए। संदेहास्पद साधनों या गलत तरीकों से भी आपके पास पैसा आयेगा। परिवार में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा। स्त्री वर्ग का साथ आपको रुचिकर लगेगा। महंगे और स्वादिष्ट भोजन के लिये आपका स्वाद जागृत होगा। घर की चीजों के लिये आप पैसा खर्च कर सकते हैं। घर पर सब लोग इकट्ठे होंगे।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

सूर्य महादशा फल (अप्रैल 8, 2064 से अप्रैल 8, 2070)

सूर्य मिथुन आपके प्रथम भाव में स्थित है:

इस अवधि में जीवन के प्रति आपका धनात्मक दृष्टिकोण रहेगा और आप में जरूरत से अधिक आत्मविश्वास रहेगा। सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार में आप कोई महत्वपूर्ण पद संभालेंगे या सत्ता प्राप्त करेंगे। छोटी अवधि की यात्राएं करेंगे जो आपकी कड़ी मेहनत के कारण सफलदायक होंगी। सामाजिक संस्थानों को आप खुलकर दान देंगे। स्वास्थ्य बुरा रह सकता है तथा परिवार में भी बीमारियां फैल सकती हैं।

चन्द्र महादशा फल (अप्रैल 8, 2070 से अप्रैल 8, 2080)

चन्द्र कर्क आपके द्वितीय भाव में स्थित है:

आप बेहद प्रसन्न रहेंगे। इस अवधि में आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। परिवार में मेल-जोल रहेगा और परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार रहेगा। मित्र और सहयोगी काफी सहायक सिद्ध होंगे। यात्राएं शुभ सिद्ध होंगी। इस समय का जितना सदुपयोग करेंगे उतना ही अच्छा रहेगा।

मंगल महादशा फल (अप्रैल 8, 2080 से अप्रैल 8, 2087)

मंगल तुला आपके पंचम भाव में स्थित है:

आप सावधान रहें क्योंकि आपकी बुद्धि भ्रमित हो सकती है। स्वास्थ्य एवं पारिवारिक सदस्यों के कारण परेशानी होगी। सट्टेबाजी से बचें। कुछ ऐसे खर्चे भी करने पड़ेंगे जो आपके नियंत्रण से बाहर होंगे। मित्र एवं सहयोगियों से निराशा हाथ लगेगी। यात्रा से थकान होगी।

राहू महादशा फल (अप्रैल 8, 2087 से अप्रैल 8, 2105)

राहू कर्क आपके द्वितीय भाव में स्थित है:

रोजमर्रा के जीवन में पैसा वसूल करने में आपको परेशानी हो सकती है। किसी भी उधम की प्रायोजना की पूरी जांच परख कर के ही पूंजी निवेश की सोचें। घर का वातावरण भी तनावपूर्ण रहेगा। परिवारजनों से कभी कभी मतभेद रहेगा। इस अवधि में आंख की पीड़ा भी आप भोग सकते हैं। साधारण रूप से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। घर के मामलों में एक असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगे।

॥ योगिनी दशा ॥

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	17. 9.97
अंत	7. 9.99
पिं	17. 9.97
ध	17.11.97
भ्र	6. 2.98
भद्रि	16. 5.98
उल्	16. 9.98
सि	5. 2.99
सं	15. 7.99
मं	7. 9.99

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.99
अंत	7. 9.02
ध	4.11.99
भ्र	4. 3.00
भद्रि	4. 8.00
उल्	4. 2.01
सि	3. 9.01
सं	3. 5.02
मं	3. 6.02
पिं	7. 9.02

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.02
अंत	7. 9.06
भ्र	13. 1.03
भद्रि	2. 8.03
उल्	2. 4.04
सि	12. 1.05
सं	2.12.05
मं	12. 1.06
पिं	1. 4.06
ध	7. 9.06

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.06
अंत	7. 9.11
भद्रि	11. 4.07
उल्	11. 2.08
सि	31. 1.09
सं	10. 3.10
मं	30. 4.10
पिं	9. 8.10
ध	9. 1.11
भ्र	7. 9.11

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.11
अंत	7. 9.17
उल्	29. 7.12
सि	28. 9.13
सं	27. 1.15
मं	27. 3.15
पिं	27. 7.15
ध	27. 1.16
भ्र	27. 9.16
भद्रि	7. 9.17

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.17
अंत	7. 9.24
सि	7.12.18
सं	27. 6.20
मं	6. 9.20
पिं	26. 1.21
ध	26. 8.21
भ्र	5. 6.22
भद्रि	25. 5.23
उल्	7. 9.24

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.24
अंत	7. 9.32
सं	5. 5.26
मं	25. 7.26
पिं	4. 1.27
ध	4. 9.27
भ्र	24. 7.28
भद्रि	3. 9.29
उल्	2. 1.31
सि	7. 9.32

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.32
अंत	7. 9.33
मं	1. 8.32
पिं	21. 8.32
ध	21. 9.32
भ्र	31.10.32
भद्रि	20.12.32
उल्	20. 2.33
सि	30. 4.33
सं	7. 9.33

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.33
अंत	7. 9.35
पिं	30. 8.33
ध	30.10.33
भ्र	19. 1.34
भद्रि	29. 4.34
उल्	29. 8.34
सि	18. 1.35
सं	28. 6.35
मं	7. 9.35

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.35
अंत	7. 9.38
ध	18.10.35
भ्र	18. 2.36
भद्रि	18. 7.36
उल्	18. 1.37
सि	17. 8.37
सं	17. 4.38
मं	17. 5.38
पिं	7. 9.38

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.38
अंत	7. 9.42
भ्र	27.12.38
भद्रि	17. 7.39
उल्	17. 3.40
सि	27.12.40
सं	16.11.41
मं	26.12.41
पिं	18. 3.42
ध	7. 9.42

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.42
अंत	7. 9.47
भद्रि	28. 3.43
उल्	28. 1.44
सि	17. 1.45
सं	27. 2.46
मं	16. 4.46
पिं	26. 7.46
ध	26.12.46
भ्र	7. 9.47

॥ योगिनी दशा ॥

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.47
अंत	7. 9.53
उल्	16. 7.48
सि	15. 9.49
सं	14. 1.51
मं	14. 3.51
पिं	14. 7.51
ध	14. 1.52
भ्र	14. 9.52
भद्रि	7. 9.53

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.53
अंत	7. 9.60
सि	24.11.54
सं	13. 6.56
मं	23. 8.56
पिं	12. 1.57
ध	12. 8.57
भ्र	22. 5.58
भद्रि	12. 5.59
उल्	7. 9.60

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.60
अंत	7. 9.68
सं	22. 4.62
मं	12. 7.62
पिं	22.12.62
ध	22. 8.63
भ्र	12. 7.64
भद्रि	22. 8.65
उल्	22.12.66
सि	7. 9.68

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.68
अंत	7. 9.69
मं	22. 7.68
पिं	11. 8.68
ध	11. 9.68
भ्र	21.10.68
भद्रि	11.12.68
उल्	11. 2.69
सि	21. 4.69
सं	7. 9.69

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.69
अंत	7. 9.71
पिं	21. 8.69
ध	21.10.69
भ्र	10. 1.70
भद्रि	20. 4.70
उल्	20. 8.70
सि	9. 1.71
सं	19. 6.71
मं	7. 9.71

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.71
अंत	7. 9.74
ध	9.10.71
भ्र	9. 2.72
भद्रि	9. 7.72
उल्	9. 1.73
सि	8. 8.73
सं	8. 4.74
मं	8. 5.74
पिं	7. 9.74

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.74
अंत	7. 9.78
भ्र	18.12.74
भद्रि	8. 7.75
उल्	8. 3.76
सि	18.12.76
सं	7.11.77
मं	17.12.77
पिं	9. 3.78
ध	7. 9.78

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.78
अंत	7. 9.83
भद्रि	19. 3.79
उल्	19. 1.80
सि	8. 1.81
सं	18. 2.82
मं	7. 4.82
पिं	17. 7.82
ध	17.12.82
भ्र	7. 9.83

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.83
अंत	7. 9.89
उल्	7. 7.84
सि	6. 9.85
सं	5. 1.87
मं	5. 3.87
पिं	5. 7.87
ध	5. 1.88
भ्र	5. 9.88
भद्रि	7. 9.89

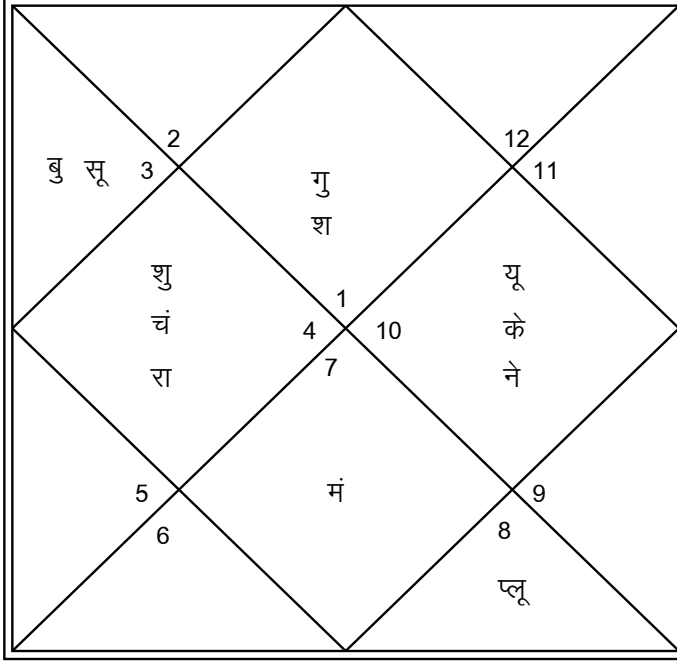
सि 7 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.89
अंत	7. 9.96
सि	15.11.90
सं	4. 6.92
मं	14. 8.92
पिं	3. 1.93
ध	3. 8.93
भ्र	13. 5.94
भद्रि	3. 5.95
उल्	7. 9.96

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.96
अंत	7. 9.04
सं	13. 4.98
मं	3. 7.98
पिं	13.12.98
ध	13. 8.99
भ्र	3. 7.00
भद्रि	13. 8.01
उल्	13.12.02
सि	7. 9.04

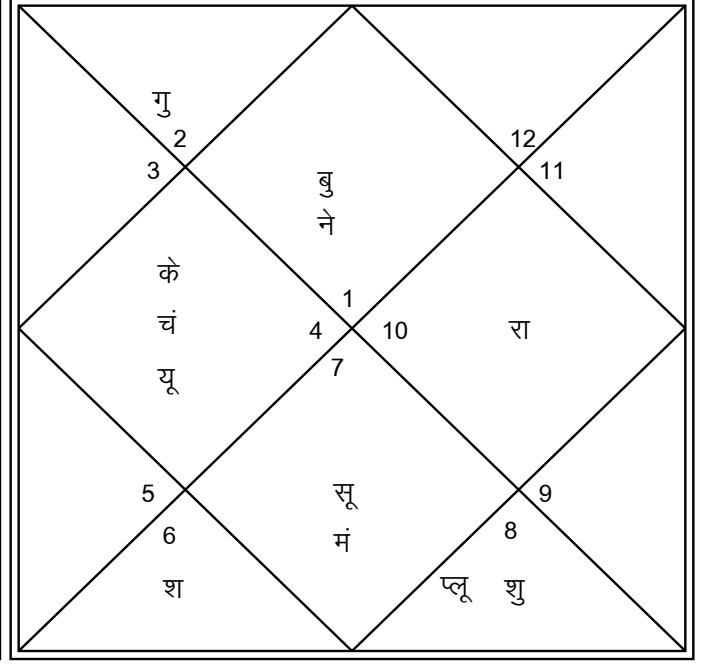
मं 1 वर्ष	
आरम्भ	7. 9.04
अंत	7. 9.05
मं	13. 7.04
पिं	2. 8.04
ध	2. 9.04
भ्र	12.10.04
भद्रि	2.12.04
उल्	2. 2.05
सि	12. 4.05
सं	7. 9.05

॥ जैमिनी पद्धति – कारकांश एवं स्वांश ॥

कारकांश चक्र



स्वांश चक्र



कारक

कारक	स्थिर	चर
आत्म	सूर्य	बुध
आमात्य	बुध	शनि
भ्रात	मंगल	शुक्र
मातृ	चंद्र	गुरु
पितृ	गुरु	चंद्र
ज्ञाति	शनि	मंगल
दारा	शुक्र	सूर्य

अवस्था

ग्रह	जागृत	बलादि	दीप्तादि
सूर्य	जाग्रत	बाल	मुदित
चंद्र	सुसुप्त	मृत	शान्त
मंगल	जाग्रत	बाल	दीन
बुध	सुसुप्त	वृद्ध	शान्त
गुरु	जाग्रत	बाल	दीप्त
शुक्र	स्वप्न	युवा	शान्त
शनि	स्वप्न	वृद्ध	दीन

॥ चरदशा ॥

चर महादशा

मिथुन 12 वर्ष	16. 6.99	16. 6.11
वृष 02 वर्ष	16. 6.11	16. 6.13
मेष 06 वर्ष	16. 6.13	16. 6.19

मीन 11 वर्ष	16. 6.19	16. 6.30
कुंभ 07 वर्ष	16. 6.30	16. 6.37
मकर 09 वर्ष	16. 6.37	16. 6.46

धनु 04 वर्ष	16. 6.46	16. 6.50
वृश्चिक 11 वर्ष	16. 6.50	16. 6.61
तुला 09 वर्ष	16. 6.61	16. 6.70

कन्या 03 वर्ष	16. 6.70	16. 6.73
सिंह 02 वर्ष	16. 6.73	16. 6.75
कर्क 12 वर्ष	16. 6.75	16. 6.87

चर अन्तरदशा

मिथुन 12 वर्ष		
वृष	16.6.99	16. 6.00
मेष	16.6.00	16. 6.01
मीन	16.6.01	16. 6.02
कुंभ	16.6.02	16. 6.03
मकर	16.6.03	16. 6.04
धनु	16.6.04	16. 6.05
वृश्चिक	16.6.05	16. 6.06
तुला	16.6.06	16. 6.07
कन्या	16.6.07	16. 6.08
सिंह	16.6.08	16. 6.09
कर्क	16.6.09	16. 6.10
मिथुन	16.6.10	16. 6.11

वृष 2 वर्ष		
मेष	16.6.11	16. 8.11
मीन	16.8.11	16.10.11
कुंभ	16.10.11	16.12.11
मकर	16.12.11	16. 2.12
धनु	16.2.12	16. 4.12
वृश्चिक	16.4.12	16. 6.12
तुला	16.6.12	16. 8.12
कन्या	16.8.12	16.10.12
सिंह	16.10.12	16.12.12
कर्क	16.12.12	16. 2.13
मिथुन	16.2.13	16. 4.13
वृष	16.4.13	16. 6.13

मेष 6 वर्ष		
वृष	16.6.13	16.12.13
मिथुन	16.12.13	16. 6.14
कर्क	16.6.14	16.12.14
सिंह	16.12.14	16. 6.15
कन्या	16.6.15	16.12.15
तुला	16.12.15	16. 6.16
वृश्चिक	16.6.16	16.12.16
धनु	16.12.16	16. 6.17
मकर	16.6.17	16.12.17
कुंभ	16.12.17	16. 6.18
मीन	16.6.18	16.12.18
मेष	16.12.18	16. 6.19



ज्योतिषीय परामर्श लें

हमारे विशेषज्ञ ज्योतिषियों से

अभी परामर्श लें >

॥ चरदशा ॥

मीन 11 वर्ष		
मेष	16.6.19	16. 5.20
वृष	16.5.20	16. 4.21
मिथुन	16.4.21	16. 3.22
कर्क	16.3.22	16. 2.23
सिंह	16.2.23	16. 1.24
कन्या	16.1.24	16.12.24
तुला	16.12.24	16.11.25
वृश्चिक	16.11.25	16.10.26
धनु	16.10.26	16. 9.27
मकर	16.9.27	16. 8.28
कुंभ	16.8.28	16. 7.29
मीन	16.7.29	16. 6.30

कुंभ 7 वर्ष		
मीन	16.6.30	16. 1.31
मेष	16.1.31	16. 8.31
वृष	16.8.31	16. 3.32
मिथुन	16.3.32	16.10.32
कर्क	16.10.32	16. 5.33
सिंह	16.5.33	16.12.33
कन्या	16.12.33	16. 7.34
तुला	16.7.34	16. 2.35
वृश्चिक	16.2.35	16. 9.35
धनु	16.9.35	16. 4.36
मकर	16.4.36	16.11.36
कुंभ	16.11.36	16. 6.37

मकर 9 वर्ष		
धनु	16.6.37	16. 3.38
वृश्चिक	16.3.38	16.12.38
तुला	16.12.38	16. 9.39
कन्या	16.9.39	16. 6.40
सिंह	16.6.40	16. 3.41
कर्क	16.3.41	16.12.41
मिथुन	16.12.41	16. 9.42
वृष	16.9.42	16. 6.43
मेष	16.6.43	16. 3.44
मीन	16.3.44	16.12.44
कुंभ	16.12.44	16. 9.45
मकर	16.9.45	16. 6.46

धनु 4 वर्ष		
वृश्चिक	16.6.46	16.10.46
तुला	16.10.46	16. 2.47
कन्या	16.2.47	16. 6.47
सिंह	16.6.47	16.10.47
कर्क	16.10.47	16. 2.48
मिथुन	16.2.48	16. 6.48
वृष	16.6.48	16.10.48
मेष	16.10.48	16. 2.49
मीन	16.2.49	16. 6.49
कुंभ	16.6.49	16.10.49
मकर	16.10.49	16. 2.50
धनु	16.2.50	16. 6.50

वृश्चिक 11 वर्ष		
तुला	16.6.50	16. 5.51
कन्या	16.5.51	16. 4.52
सिंह	16.4.52	16. 3.53
कर्क	16.3.53	16. 2.54
मिथुन	16.2.54	16. 1.55
वृष	16.1.55	16.12.55
मेष	16.12.55	16.11.56
मीन	16.11.56	16.10.57
कुंभ	16.10.57	16. 9.58
मकर	16.9.58	16. 8.59
धनु	16.8.59	16. 7.60
वृश्चिक	16.7.60	16. 6.61

तुला 9 वर्ष		
वृश्चिक	16.6.61	16. 3.62
धनु	16.3.62	16.12.62
मकर	16.12.62	16. 9.63
कुंभ	16.9.63	16. 6.64
मीन	16.6.64	16. 3.65
मेष	16.3.65	16.12.65
वृष	16.12.65	16. 9.66
मिथुन	16.9.66	16. 6.67
कर्क	16.6.67	16. 3.68
सिंह	16.3.68	16.12.68
कन्या	16.12.68	16. 9.69
तुला	16.9.69	16. 6.70

कन्या 3 वर्ष		
तुला	16.6.70	16. 9.70
वृश्चिक	16.9.70	16.12.70
धनु	16.12.70	16. 3.71
मकर	16.3.71	16. 6.71
कुंभ	16.6.71	16. 9.71
मीन	16.9.71	16.12.71
मेष	16.12.71	16. 3.72
वृष	16.3.72	16. 6.72
मिथुन	16.6.72	16. 9.72
कर्क	16.9.72	16.12.72
सिंह	16.12.72	16. 3.73
कन्या	16.3.73	16. 6.73

सिंह 2 वर्ष		
कन्या	16.6.73	16. 8.73
तुला	16.8.73	16.10.73
वृश्चिक	16.10.73	16.12.73
धनु	16.12.73	16. 2.74
मकर	16.2.74	16. 4.74
कुंभ	16.4.74	16. 6.74
मीन	16.6.74	16. 8.74
मेष	16.8.74	16.10.74
वृष	16.10.74	16.12.74
मिथुन	16.12.74	16. 2.75
कर्क	16.2.75	16. 4.75
सिंह	16.4.75	16. 6.75

कर्क 12 वर्ष		
मिथुन	16.6.75	16. 6.76
वृष	16.6.76	16. 6.77
मेष	16.6.77	16. 6.78
मीन	16.6.78	16. 6.79
कुंभ	16.6.79	16. 6.80
मकर	16.6.80	16. 6.81
धनु	16.6.81	16. 6.82
वृश्चिक	16.6.82	16. 6.83
तुला	16.6.83	16. 6.84
कन्या	16.6.84	16. 6.85
सिंह	16.6.85	16. 6.86
कर्क	16.6.86	16. 6.87

॥ गोचर फल (19-10-2022) ॥

सूर्य तुलाराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप जीवन का बड़े उत्साह और उल्लास से स्वागत करेंगे प्रणय प्रेम संबंधों के लिये यह समय श्रेयस्कर नहीं है। बहुत अधिक सोच विचार हानिकर हो सकता है इसलिये इससे आप बचें। अचानक यात्रा की संभावना भी हो सकती है।

चन्द्र कर्कराशि में आपके दूसरे भाव में स्थित है:

आप बेहद प्रसन्न रहेंगे। इस अवधि में आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। परिवार में मेल-जोल रहेगा और परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार रहेगा। मित्र और सहयोगी काफी सहायक सिद्ध होंगे। यात्राएं शुभ सिद्ध होंगी। इस समय का जितना सदुपयोग करेंगे उतना ही अच्छा रहेगा।

मंगल मिथुनराशि में आपके पहले भाव में स्थित है:

इस अवधि में मिले जुले फल मिलेंगे। आपकी इच्छाओं के विपरीत परिणाम हो सकते हैं इसलिये फल के प्रति अधिक उत्साह दिखाने वाली प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखें। छोटी मोटी बीमारी या हल्की दुर्घटना होने की संभावना भी है। जोखिम उठाने या सट्टेबाजी के लिये यह समय श्रेयस्कर नहीं है। पारिवारिक झंझटों के कारण मानसिक शांति भंग हो सकती है।

क्या आपकी कुंडली में राज योग है?

अभी खरीदें >



॥ गोचर फल (19-10-2022) ॥

बुध कन्याराशि में आपके चौथे भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपके अन्दर बैठी हुई व्यवसाय कि सहज योग्यता विकास प्राप्त करेगी। आपकी व्यवहार बुद्धि और समीक्षात्मक दृष्टि चैतन्य रहेगी। आप बहुत सलीके से काम करेंगे। सुखी रहेंगे और साधारण तौर पर प्रसन्नता प्राप्त होगी। अपनी कर्मठता से आप बहुत लाभ उठायेंगे। पारिवारिक वातावरण सौमनस्यपूर्ण रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। विलास सामग्री पर व्यय करेंगे। संचार माध्यम से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शुभ संस्कार भी मनाया जा सकता है।

गुरु मीनराशि में आपके दसवें भाव में स्थित है:

व्यापार नौकरी या धन्धे में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार होगा और पद बढ़ेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। व्यापार और नौकरी के सिलसिले में आप काफी भ्रमण करेंगे। शत्रु प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे पर उसमें कामयाब नहीं होंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा।

शुक्र तुलाराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस अवधि के दौरान आप स्त्रीवर्ग की ओर आकर्षित रहेंगे। इस अवधि में अचानक ऐसी घटनाएं घटेंगी जो आपके लिये हितकर हो। इसके अलावा इस दौरान आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और खुशहाली भी बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। बहु प्रतीक्षित अभिलाषाओं की सम्पूर्ति होगी। यदि आप में सृजनात्मक क्षमता है तो इस अवधि के दौरान आपकी कला संगीत इत्यादि में सफलदायक गति रहेगी। सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा और पुराने मित्रों सहयोगियों से मुलाकात होगी। संचार के माध्यम से आपको कोई बहुत अच्छी खबर भी मिल सकती है।

आपका 12 महीने का भविष्यफल

अभी खरीदें >



॥ गोचर फल (19-10-2022) ॥

शनि मकरराशि में आपके आठवें भाव में स्थित है:

कोई महत्वपूर्ण चीज खोने का खतरा बना रहेगा। वरिष्ठ जनों या सत्ताधारी अफसरों से आपके संबंध बिगड़ सकते हैं। लेन देन के व्यापार में हानि होने की भी संभावना है। आपके मित्र या सहयोगी अपना वचन नहीं निभाएंगे। परिवारजनों के व्यवहार में भी फर्क आ जाएगा। मानसिक वेदना की स्थिति आपके व्यवहार से परिलक्षित होती रहेगी। वैसे इस अवधि में गूढ़ मान या परामनोविज्ञान आदि क्षेत्रों से कुछ मदद मिल सकती है। अच्छा यही होगा कि अपनी योग्यता और प्रतिभा पर ही निर्भर करें। अगर वसीयत प्राप्ति के इच्छुक हैं तो वह अचानक प्राप्त होकर आपको चमत्कृत कर देगी। किसी की मौत की बुरी खबर मिल सकती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

राहू मेष राशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। आमदनी में इजाफा स्पष्टरूप से प्रतिक्षित है। नये उद्यमों से सम्बद्ध रहेंगे। मित्र और सहयोगी पूरी मदद करेंगे। लम्बी यात्राओं से लाभ होगा। विदेशियों से अधिक सम्पर्क बनेंगे। पारिवारिक जीवन अति सुखद रहेगा। प्रणय और प्रेम संबंधों के लिये यह काल वरदान सदृश है। आप संघर्ष में वीरोचित भावना से जूझते रहेंगे और शत्रुओं का पराभव कर देंगे। वैसे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सिर्फ कर्ण रोग से परेशान रह सकते हैं।

केतु तुलाराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप बहुत से काम एक साथ करने का प्रयत्न करेंगे और ठीक से कुछ भी नहीं कर पायेंगे। जल्दबाजी से बिल्कुल काम नहीं बनेगा। आप इस बात का पूरा ध्यान रखें कि इस अवधि में परिवार के किसी सदस्य की बीमार पड़ने की संभावना है। कुल मिलाकर पारिवारिक माहौल तनावग्रस्त ही रहेगा। जोखिम उठाने की प्रवृत्ति को लगाम दें। शत्रु आपकी साख बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे। इस ओर पूरी तरह शक्तिरक्त रहें। जहां तक संभव हो। यात्रा से बचें। पेट के रोग से व्यथित रहेंगे।



शनि संबंधित सभी समस्याओं का संपूर्ण समाधान

शनि रिपोर्ट

अभी खरीदें



॥ लालकिताब फलकथन ॥

सूर्य आपके पहले भाव में स्थित है:

यदि सूर्य शुभ है तो जातक धार्मिक इमारतों या भवनों का निर्माण और सार्वजनिक उपयोग के लिए कुओं की खुदाई करवाता है। उसकी आजीविका का स्थाई स्रोत अधिकांशतः सरकारी होगा। इमानदारी से कमाए गए धन में वृद्धि होगी। जातक अपनी आंखों देखी बातों पर ही विश्वास करेगा, कान से सुनी गई बातों पर नहीं। यदि सूर्य अशुभ है तो जातक के पिता की मृत्यु जातक के बचपन में ही हो जाती है। यदि शुक्र सातवें भाव में हो तो दिन के समय बनाया गया शारीरिक संबंध पत्नी को लगातार बीमारी देता है और तपेदिक के संक्रमण का भय पैदा करता है। पहले भाव का अशुभ सूर्य और पांचवें भाव का मंगल एकएक कर संतान की मृत्यु का कारण होगा। इसी प्रकार पहले भाव का अशुभ सूर्य और आठवें भाव का शनि एकएक करके संतान की मृत्यु का कारण बनता है। यदि सातवें भाव में कोई ग्रह न हो तो 24 से पहले विवाह कर लेना जातक के लिए भाग्यशाली रहता है अन्यथा जातक के चौबीसवां साल विनाशकारी साबित होगा।

उपाय

- 1) 24 वर्ष से पहले ही शादी कर लें।
- 2) दिन के समय यौन संबंध न बनाएं।
- 3) अपने पैतृक घर में पानी के लिए एक हैंडपंप लगवाएं।
- 4) अपने घर के अंत में बाईं ओर एक छोटे और अंधेरे कमरे का निर्माण कराएं।
- 5) पति या पत्नी दोनों में से किसी एक को गुड़ खाना बंद कर देना चाहिए।



एस्ट्रोसेज शॉप

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी



परामर्श



॥ लालकिताब फलकथन ॥

चन्द्र आपके दूसरे भाव में स्थित है:

दूसरे भाव चंद्रमा स्थित होने पर वह भाव बृहस्पति, शुक्र और चंद्रमा के प्रभाव में होगा। क्योंकि दूसरा घर बृहस्पति का पक्का घर होता है और दूसरी राशि वृषभ का स्वामी शुक्र होता है। यहां स्थित चंद्रमा बहुत अच्छे परिणाम देता है। चंद्रमा इस घर में बहुत मजबूत हो जाता है क्योंकि उसे शुक्र के खिलाफ बृहस्पति का अनुकूल समर्थन मिल जाता है इस कारण यहां का चंद्रमा अच्छे परिणाम देता है। ऐसे में जातक के बहनें नहीं होतीं लेकिन निश्चित प से भाइयों की प्राप्ति होती है। लेकिन यदि ऐसा नहीं होता तो जातक की पत्नी के भाई अवश्य होते हैं। जातक को पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा जर मिलता है। ग्रहों की स्थिति जो भी हो लेकिन यहां स्थित चंद्रमा जातक के वंश को जर बढ़ाता है। जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है जिससे उसके भाग्योदय में सहयोग मिलता है। चंद्रमा की चीजों से जुड़े व्यवसाय लाभप्रद साबित होंगे। जातक एक प्रतिष्ठित शिक्षक भी हो सकता है। बारहवें भाव में स्थित केतू यहां के चंद्रमा को ग्रहण लगाने वाला रहेगा जो जातक को अच्छी शिक्षा या पुत्र से वंचित कर सकता है।

उपाय

- 1) घर के भीतर मंदिर का होना जातक की पुत्र प्राप्ति में बाधक हो सकता है।
- 2) चंद्रमा से सम्बंधित चीजें जैसे चांदी, चावल, घर की कच्ची फर्श, माँ और बुजुर्ग महिलाएं तथा उनका आशीर्वाद जातक के लिए बहुत भाग्यशाली रहेंगे।
- 3) लगातार 43 दिनों तक कन्याओं छोटी लड़कियों को हरा कपड़ा बांटें।
- 4) चंद्रमा से सम्बंधित चीजें जैसे चांदी का एक चौकोर टुकड़ा अपने घर की नींव में दबाएं।

मंगल आपके पांचवें भाव में स्थित है:

पांचवां घर मंगल के नैसर्गिक मित्र सूर्य का घर होता है। इसलिए इस घर में मंगल बहुत अच्छे परिणाम देता है। जातक के पुत्र उसकी प्रसिद्धि और धनार्जन के माध्यम बनते हैं। जातक की समृद्धि पुत्र प्राप्ति के बाद कई गुना बढ़ जाती है। शुक्र और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तुएं और रिश्तेदार को हर तरीके से फायदेमंद साबित होंगे। जातक के पूर्वजों में से कोई चिकित्सक या वैद्य रहा होगा। जातक की उम्र के साथ उसकी समृद्धि भी बढ़ती जाती है। लेकिन विपरीत लिंगी के साथ भावनात्मक लगाव और रोमांस जातक के लिए अत्यधिक विनाशकारी साबित होंगे और जातक की मानसिक शांति और रातों की नींद खराब करने के कारण बनेंगे।

उपाय

- 1) अपना नैतिक चरित्र अच्छा बनाए रखें।
- 2) रात को अपने बिस्तर के सिरहने एक बर्तन में पानी रखें और सुबह उसे किसी गमले में डाल दें।
- 3) अपने पूर्वजों की श्राद्ध करें और घर में एक नीम के पेड़ लगाएं।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

बुध आपके पहले भाव में स्थित है:

पहले घर में स्थित बुध जातक को दयालु, विनोदी और प्रशासनिक कौशल के साथ राजनयिक बनाता है। आमतौर पर ऐसा लम्बे समय तक जीता है, स्वार्थी हो जाता है तथा स्वभाव से नटखट होकर, मांशाहार और मदिरा पान की ओर आकृष्ट हो जाता है। जातक को सरकार से मदद मिलती है और उसकी बेटियां राजसी जीवन जीती हैं। जिस भाव में सूर्य बैठा है उस भाव से संबंधित रिश्तेदार बहुत कम समय में खूब पैसा कमा कर धनवान बन जाते हैं। स्वयं जातक के पास भी आमदनी के कई स्रोत होते हैं। यदि सूर्य बुध के साथ पहले भाव में हो अथवा बुध सूर्य के द्वारा देखा जाता हो तो जातक की पत्नी किसी अमीर और कुलीन परिवार से आएगी और अच्छे स्वभाव वाली होगी। ऐसा जातक मंगल से दुष्प्रभावी हो सकता है लेकिन इसे सूर्य से बुरे परिणाम नहीं मिलेंगे। राहु और केतु बुरे प्रभावी होंगे जो जातक के वंशजों और ससुराल वालों के लिए हानिकारक होंगे। पहले घर में स्थित बुध के कारण जातक दूसरों को प्रभावित करने की कला में माहिर होगा और वह किसी राजा की तरह जिएगा। पहले घर में बुध नीच का हो और चंद्रमा सातवें घर में हो तो जातक नशे के कारण अपना विनाश कर लेता है।

उपाय

- 1) हरे रंग और शालियों से यथासंभव दूर रहें।
- 2) अंडा, मांस और मदिरा का सेवन न करें।
- 3) घूम फिर कर करने वाले व्यापार से एक ही स्थान पर बैठ कर करने वाला व्यापार अच्छा और फायदेमंद रहेगा।

गुरु आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

इस घर में बृहस्पति अपने शत्रु ग्रहों बुध, शुक्र और राहु से सम्बंधित चीजों और रिश्तेदारों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। नतीजतन, जातक की पत्नी दुखी रहेगी। इसी तरह, बहनें, बेटियां और बुआ भी दुखी रहेंगी। बुध सही स्थिति में तो भी जातक कर्जदार होता है। जातक तभी आराम से रह पाएगा जब वह पिता, भाइयों, बहनों और मां के साथ साथ एक संयुक्त परिवार में रहे।

उपाय

- 1) हमेशा अपने शरीर पर सोना पहनें।
- 2) तांबे का कड़ा पहनें।
- 3) पीपल के पेड़ में जल चढ़ाएं।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

शुक्र आपके दूसरे भाव में स्थित है:

दूसरों का बुरा या बुराई करना जातक के लिए हानिकारक साबित होगा। साठ वर्ष की उम्र तक पैसा, धन और संपत्ति बढ़ते जाएंगे। शेरमुखी घर सामने से व्यापक पीछे से कम) जातक के लिए विनाशकारी साबित होगा। सोने और आभूषणों से संबंधित व्यवसाय या व्यापार अत्यंत हानिकारक होगा। मिट्टी के सामान से जुड़ा व्यवसाय, कृषि और पशु बेहद फायदेमंद साबित होंगे। स्त्री जातक की कुण्डली में दूसरे भाव में स्थित शुक्र संतान की समस्या देता है जबकि पुरुष जातक की कुण्डली में ऐसी स्थित पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करती है।

उपाय

- 1) संतान की समस्या के लिए जातक को मंगल से संबंधित चीजें जैसे शहद, सौंफ अथवा देशी खांड का इस्तेमाल करना चाहिए।
- 2) गायों को हल्दी के पीले रंग से रंगे दो किलोग्राम आलू खिलाएं।
- 3) मंदिर में दो किलोग्राम गाय का घी भेंट करें।
- 4) व्यभिचार से बचें।

शनि आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

जातक के भाग्य का निर्धारण उसकी उम्र के अड़तालीसवें वर्ष में होगा। जातक कभी भी निःसंतान नहीं रहेगा। जातक चतुराई और छल से पैसे कमाएगा। शनि ग्रह राहु और केतु की स्थिति के अनुसार अच्छा या बुरा परिणाम देगा।

उपाय

- 1) किसी महत्वपूर्ण काम को शु करने से पहले 43 दिनों तक तेल या शराब की बूंदें जमीन पर गिराएं।
- 2) शराब न पियें और अपना नैतिक चरित्र ठीक रखें।



बृहत् कुंडली

अब तक की सबसे विस्तृत कुंडली

250+ पृष्ठ | ~~₹2100~~ ₹799 सिर्फ

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

राहू आपके दूसरे भाव में स्थित है:

यदि दूसरे घर में राहू शुभ अवस्था में हो तो जातक पैसा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और किसी राजा की तरह जीवन जीता है। जातक दीर्घायु होता है। दूसरा भाव बृहस्पति और शुक्र से प्रभावित होता है। यदि बृहस्पति शुभ हो तो जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में धन से युक्त व आराम भरी जिन्दगी जीता है। यदि राहू नीच का हो तो जातक गरीब होता है, उसका पारिवारिक जीवन खराब होता है। वह पेट के विकारों से परेशान होता है। जातक पैसे बचाने में असमर्थ होता है और उसकी मृत्यु किसी हथियार से होती है। उसके जीवन के दसवें, इक्कीसवें और बयालीसवें वर्ष में चोरी आदि माध्यमों से उसका धन खो जाता है।

उपाय

- 1) चांदी की एक ठोस गोली अपनी जेब में रखें।
- 2) बृहस्पति से सम्बंधित चीजें जैसे सोना, पीले कपड़े और केसर आदि उपयोग में लाएं।
- 3) माँ के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रखें।
- 4) शादी के बाद ससुराल वालों से कोई बिजली का उपकरण न लें।

केतु आपके आठवें भाव में स्थित है:

आठवां घर मंगल ग्रह का है, जो केतु का शत्रु है। यदि आठवें भाव में केतू शुभ है तो जातक को चौंतीस साल की उम्र में अथवा जातक की बहन या पुत्री की शादी के बाद पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि बृहस्पति या मंगल छठवें या बारहवें घर में हों तो केतू अशुभ परिणाम नहीं देता। चंद्रमा के दूसरे भाव में स्थित होने पर भी यही परिणाम मिलता है। यदि आठवें भाव में स्थित केतू अशुभ हो तो जातक की पत्नी बीमार रहती है। पुत्र का जन्म नहीं होता, यदि होता है तो मृत्यु हो जाती है। जातक मधुमेह या मूत्र रोग से ग्रस्त होता है। यदि शनि अथवा मंगल सातवें घर में हों तो जातक दुर्भाग्यशाली होता है। आठवें भाव में अशुभ केतू के होने की अवस्था में जातक का चरित्र उसके पत्नी के स्वास्थ्य को निर्धारित करता है। छब्बीस साल की उम्र के बाद वैवाहिक जीवन में परेशानियां आती हैं।

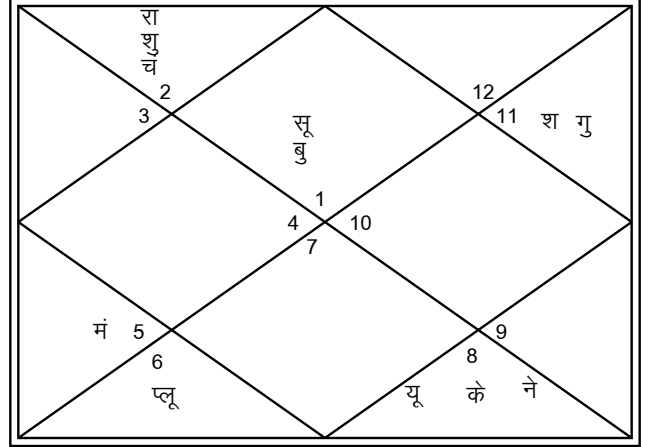
उपाय

- 1) एक कुत्ता पालें।
- 2) किसी मंदिर में काला और सफेद रंग वाला कंबल दान करें।
- 3) भगवान गणेश की पूजा करें।
- 4) कान में सोना पहनें।
- 5) माथे पर केसर का तिलक लगाएं।

॥ लाल किताब गणना ॥

नाम	Kaushik Biswas		सूर्योदय	04. 49. 37	दशा भोग्य	xq: 1 o 9 ek 22 fn
लिंग	Male	रेखांश	88.34.E	तिथि	तृतिया	सूर्यास्त 18. 22. 53
दिनांक	16.6.1999	अक्षांश	23.10.N	योग	ध्रुव	करण गर
दिन	बुधवार	जन्म स्थान	Ranaghat	लग्न	मिथुन	लग्न स्वामी बुध
समय	6.25.0	अयनांश	023-50-56	राशि	कर्क	राशि स्वामी चंद्र
साम्पातिक काल	00.24.41	अयनांश नाम	लाहिरी	नक्षत्र	पुनर्वसु-4	नक्षत्र स्वामी गुरु

लग्न चक्र



लाल किताब ग्रह स्थिति					
ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	नेक / मंदा
सूर्य	मेष	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
चंद्र	वृषभ	-----	नहीं	हाँ	नेक / शुभ
मंगल	सिंह	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
बुध	मेष	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
गुरु	कुंभ	-----	नहीं	हाँ	मंदा / अशुभ
शुक्र	वृषभ	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
शनि	कुंभ	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
राहु	वृषभ	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
केतु	वृश्चिक	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष	राहु 6 वर्ष	केतु 3 वर्ष	गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष
आरम्भ 16/06/1999	आरम्भ 16/06/2005	आरम्भ 16/06/2011	आरम्भ 16/06/2014	आरम्भ 16/06/2020	आरम्भ 16/06/2022
अंत 16/06/2005	अंत 16/06/2011	अंत 16/06/2014	अंत 16/06/2020	अंत 16/06/2022	अंत 16/06/2023
राहु 16/06/2001	मंगल 16/06/2007	शनि 16/06/2012	केतु 16/06/2016	सूर्य 16/02/2021	गुरु 16/10/2022
बुध 16/06/2003	केतु 16/06/2009	राहु 16/06/2013	गुरु 16/06/2018	चन्द्र 16/10/2021	सूर्य 16/02/2023
शनि 16/06/2005	राहु 16/06/2011	केतु 16/06/2014	सूर्य 16/06/2020	मंगल 16/06/2022	चन्द्र 16/06/2023
शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष	शनि 6 वर्ष	राहु 6 वर्ष	केतु 3 वर्ष
आरम्भ 16/06/2023	आरम्भ 16/06/2026	आरम्भ 16/06/2032	आरम्भ 16/06/2034	आरम्भ 16/06/2040	आरम्भ 16/06/2046
अंत 16/06/2026	अंत 16/06/2032	अंत 16/06/2034	अंत 16/06/2040	अंत 16/06/2046	अंत 16/06/2049
मंगल 16/06/2024	मंगल 16/06/2028	चन्द्र 16/02/2033	राहु 16/06/2036	मंगल 16/06/2042	शनि 16/06/2047
सूर्य 16/06/2025	शनि 16/06/2030	मंगल 16/10/2033	बुध 16/06/2038	केतु 16/06/2044	राहु 16/06/2048
चन्द्र 16/06/2026	शुक्र 16/06/2032	गुरु 16/06/2034	शनि 16/06/2040	राहु 16/06/2046	केतु 16/06/2049
गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष	शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष
आरम्भ 16/06/2049	आरम्भ 16/06/2055	आरम्भ 16/06/2057	आरम्भ 16/06/2058	आरम्भ 16/06/2061	आरम्भ 16/06/2067
अंत 16/06/2055	अंत 16/06/2057	अंत 16/06/2058	अंत 16/06/2061	अंत 16/06/2067	अंत 16/06/2069
केतु 16/06/2051	सूर्य 16/02/2056	गुरु 16/10/2057	मंगल 16/06/2059	मंगल 16/06/2063	चन्द्र 16/02/2068
गुरु 16/06/2053	चन्द्र 16/10/2056	सूर्य 16/02/2058	सूर्य 16/06/2060	शनि 16/06/2065	मंगल 16/10/2068
सूर्य 16/06/2055	मंगल 16/06/2057	चन्द्र 16/06/2058	चन्द्र 16/06/2061	शुक्र 16/06/2067	गुरु 16/06/2069
शनि 6 वर्ष	राहु 6 वर्ष	केतु 3 वर्ष	गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष
आरम्भ 16/06/2069	आरम्भ 16/06/2075	आरम्भ 16/06/2081	आरम्भ 16/06/2084	आरम्भ 16/06/2090	आरम्भ 16/06/2092
अंत 16/06/2075	अंत 16/06/2081	अंत 16/06/2084	अंत 16/06/2090	अंत 16/06/2092	अंत 16/06/2093
राहु 16/06/2071	मंगल 16/06/2077	शनि 16/06/2082	केतु 16/06/2086	सूर्य 16/02/2091	गुरु 16/10/2092
बुध 16/06/2073	केतु 16/06/2079	राहु 16/06/2083	गुरु 16/06/2088	चन्द्र 16/10/2091	सूर्य 16/02/2093
शनि 16/06/2075	राहु 16/06/2081	केतु 16/06/2084	सूर्य 16/06/2090	मंगल 16/06/2092	चन्द्र 16/06/2093
शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष			
आरम्भ 16/06/2093	आरम्भ 16/06/2096	आरम्भ 16/06/2102			
अंत 16/06/2096	अंत 16/06/2102	अंत 16/06/2104			
मंगल 16/06/2094	मंगल 16/06/2098	चन्द्र 16/02/2103			
सूर्य 16/06/2095	शनि 16/06/2100	मंगल 16/10/2103			
चन्द्र 16/06/2096	शुक्र 16/06/2102	गुरु 16/06/2104			

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की सम राशि है। सूर्य तीसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। सूर्यदृष्टि सातवें घरावर आहे शनि की पूर्ण दृष्टि सूर्य पर है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित सूर्य इस बात का संकेत कर रहा है कि आपका स्वभाव स्पष्ट और उदार होगा। आपके छोटे भाई और बहन भाग्यशाली होंगे वो अच्छे मित्रों वाले और पद प्रतिष्ठा वाले होंगे। आपकी मां धार्मिक विचारों वाली और तीर्थयात्रा करने वाली होंगी। आपके बच्चों की शिक्षा का स्तर अच्छा होगा। वे दूर देश में शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सरकार से आपके संबंध अच्छे रहेंगे। सत्ता से से जुड़े और शक्तिशाली लोगों से आपके अच्छे रिश्ते रहेंगे। आप अपने पिता का आदर करते हैं और उनकी आज्ञा मानते हैं। आपका जीवन साथी अच्छे खानदान से होगा। आप स्वभाव से ईमानदार और धार्मिक होंगे अथवा नैतिकता के दृष्टिकोण से आपका बर्ताव उचित रहेगा। लेकिन यहां स्थित सूर्य आपके स्वभाव में आक्रामकता, कभीकभी विवेक हीनता, अलस्य, क्षमाहीनता, घमंड, धर्यहीनता देता है। हांलाकि यह आपमें महत्वाकांक्षा और प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराने के गुण भी देता है।

यहां स्थित सूर्य आपको तेजस्वी और लम्बा तो बनाता है लेकिन साथ ही गंजापन और दुर्बलता भी दे सकता है, और आप सिर या आंखों की समस्या से पीड़ित हो सकते हैं लेकिन आपका बाकी स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हो सकता है कि बाल्यावस्था में स्वास्थ्य कुछ हद तक उदासीन रहे। आपकी कुछ कमाई पशुओं के माध्यम से भी हो सकती है, और बच्चों की संख्या कम रह सकती है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र कर्क राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की स्व राशि है। चन्द्र दूसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में दूसरे घर में स्थित है। चन्द्रदृष्टि आठवें घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि चन्द्र पर है।

आपके दूसरे भाव में स्थित चंद्रमा अधिकांश मामलों में आपको लाभदायी सिद्ध होगा। आपका परिवार बड़ा और खुशहाल होगा। यह स्थिति आपके आर्थिक पक्ष को भी मजबूत करने वाली सिद्ध होगी। आपकी आमदनी अच्छी होगी साथ ही आप धन की बचत भी कर पाएंगे। लेकिन आपकी आर्थिक स्थिति में समय समय पर कुछ उतार चढ़ाव भी सम्भव है।

चन्द्रमा की इस स्थिति के कारण आप अनेकों लोगों को रोजगार देने में समर्थ हो सकते हैं। स्त्रियां आपके धन संग्रह में सहायक होंगी। चंद्रमा की यह स्थिति आपकी उत्तम शिक्षा की संकेतक है। आप पढ़े लिखे और उदार हैं लेकिन हो सकता है आपकी प्रारम्भिक शिक्षा में कुछ व्यवधान रहे। आप उदार और मृदुभाषी हैं लेकिन आपकी वाणी में कोई दोष भी हो सकता है।

आपका चेहरा आकर्षक और लुभावना होगा। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। आपकी गणना प्रतिष्ठित और इज्जतदार लोगों में होगी और आपको सुन्दर और स्वादिष्ट भोजन खाने को मिलेगा लेकिन चंद्रमा की यही स्थिति आपको आंखों की कोई परेशानी भी दे सकती है। आपके बच्चे विदेश यात्रा करेंगे और वे कई बार अपना व्यवसाय परिवर्तित कर सकते हैं।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल तुला राशि में स्थित है, जो कि मंगल की सम राशि है। मंगल ग्यारहवें, छठे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पांचवें घर में स्थित है। मंगलदृष्टि आठवें, ग्यारहवें, बारहवें घरावर आहे गुरु,शनि की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

पांचवे भाव में स्थित मंगल आपमें चंचलता देने के साथसाथ आपको बुद्धिमान बनाता है लेकिन आपके स्वभाव में उग्रता जल्द ही आ जाती है। यदि आप कुसंगति के स्वयं को नहीं बचाएंगे तो आप भी व्यसनी हो जाएंगे। छल कपट से दूर रहना भी आपके लिए हितकर होगा। आपको पेट से सम्बंधित परेशानियां भी समयसमय पर परेशान कर सकती है अत खानपान पर संयम रखना जरी होगा।

ज्यादतियों और सट्टे बाजारी के शौक के कारण आपको घाटा भी उठाना पड सकता है। इन कारणों से आप तनावग्रस्त और आक्रामक हो सकते हैं। हांलाकि आप बुद्धिमान व्यक्ति हैं लेकिन कोईकोई निर्णय बिना विवेक के भी ले सकते हैं। आपका प्रथम पुत्र बहुत जल्द गुस्सा करने वाला होगा, उसे दुर्घटनाओं और चोट लगने का भय बना रहेगा। कोई संतान अवज्ञाकारी भी हो सकती है।

आपकी संतान शल्य चिकित्सा के माध्यम से हो सकती है। आप पेट की तकलीफों और कब्जजन्य रोगों से परेशान रह सकते हैं। आप विपरीतलिंगी के प्रति अधिक आकर्षित हो सकते हैं, यदि आपने इस मामले में संयम से काम नहीं लिया तो आपकी बदनामी भी हो सकती है। आपको जिम जाना अथवा व्यायाम करना बहुत पसंद होगा।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध मिथुन राशि में स्थित है, जो कि बुध की स्व राशि है। बुध पहले, चौथे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। बुधदृष्टि सातवें घरावर आहे शनि की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

आप सौम्य स्वभाव के और हमेशा खुश रहने वाले व्यक्ति हैं। आप शान्त चित्त और कुशाग्र बुद्धि हैं। आपकी हाजिरजबाबी, समझदारी और मित्रों के साथ किया गया सरल व्यवहार आपको प्रसंशनीय बनाएगा। बुध की यह स्थिति आपको उदारता और सदाचार का ज्ञान भी देती है। आप देखने आपकर्षक व्यक्तित्व के और दीर्घायु व्यक्ति हैं। आपको कई भाषाओं का ज्ञान हो सकता है।

आप किसी बात को बहुत जल्दी आत्मसात कर लेते हैं साथ ही आप एक अच्छे वक्ता भी हैं। आप कई विषयों में गहराई से अनुसंधान करेंगे, विशेषकर ज्योतिष, गणित, जादू या इंजीनिअरिंग जैसे विषयों में आपकी गहरी रुचि हो सकती है। आप एक बड़े ही निपुण व्यवसायी व्यक्ति हैं। लेकिन यहां स्थिति बुध अशुभ दशाओं के आने पर स्नायु तंत्र और त्वचा से सम्बंधित रोग भी दे सकता है।

बुध की इस स्थिति के कारण आप अपने जन्म स्थान से दूर भी रह सकते हैं। आप अपने जीवन काल में कई विदेश यात्रा कर सकते हैं। जीवन के सत्ताइसवें साल में आप कोई धार्मिक यात्रा भी कर सकते हैं। गीतसंगीत के क्षेत्र में भी आपकी अच्छी खासी रुचि हो सकती है। बुध की यह स्थिति आपको वाणी, लेखन या प्रकाशन की क्षेत्र से जीविकोपार्जन करवा सकती है। आप सभी सुख सुविधाओं का प्राप्त करेंगे।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

गुरु विचार

आपकी कुण्डली में गुरु मेष राशि में स्थित है, जो कि गुरु की मित्र राशि है। गुरु सातवें, दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में ग्यारहवें घर में स्थित है। गुरुदृष्टि तीसरे, पांचवें, सातवें घरावर आहे मंगल की पूर्ण दृष्टि गुरु पर है।

यहां स्थित बृहस्पति आपको सुंदर के साथसाथ निरोगी और दीर्घायु शरीर भी देता है। आप संतोषी, उदार और परोपकारी व्यक्ति हैं। आप कुशाग्र बुद्धि और विचारवान हैं। आप प्रमाणिक सच बोलने वाले और साधु स्वभाव के हैं। आप सज्जनों और श्रेष्ठ व्यक्तियों की संगति करने वाले व्यक्ति हैं। आप राजा या सरकार के द्वारा सम्मान और लाभ मिलेगा। श्रीमान और कुलीन लोगों से आपकी मित्रता होगी।

आपके मित्र अच्छे स्वभाव के होंगे। आपकी आशाओं और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में वो आपकी सहायता करेंगे। अच्छे मित्रों की सलाह आपके लिए उत्तम और फायदेमंद रहेगी। आपके द्वारा किए गए उत्तम कार्यों से समाज में आपका नाम होगा और श्रेष्ठता भी बढ़ेगी। आपको अर्थलाभ और धन की प्राप्ति होगी। आप धन धान्य से पूर्ण भाग्यवान व्यक्ति हैं। आपके पास आमदनी के कई श्रोत होने चाहिए।

इस भाव का बृहस्पति कभीकभी कंजूस बनाता है और संतान को लेकर कुछ चिंताएं भी देता है। उम्र के बत्तीसवें वर्ष में आपको बहुत लाभ होता है। लेकिन आपकी पूर्वाजित सम्पत्ति को कोई और हड़प सकता है या किसी कारण से वह आपके हाथ से निकल जाएगी। आप पराक्रमी, पिता के सहायक और शत्रुओं को पराजित करने वाले व्यक्ति हैं। आप राज पूज्य या राज कृपा युक्त बने रहेंगे।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र कर्क राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की शत्रु राशि है। शुक्र बारहवें, पांचवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में दूसरे घर में स्थित है। शुक्रदृष्टि आठवें घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

दूसरे भाव में शुक्र होने के कारण आप का मुखमंडल शोभायमान होगा। आपके दांत भी सुंदर और आकर्षक होंगे। आप बुद्धिमान और मृदुभाषी व्यक्ति हैं। आप स्वभाव से मिलनसार और नीतिपूर्ण बातें करने वाले हैं। आप कुशाग्रबुद्धि और धार्मिक भावनाओं से परिपूर्ण हैं। आप कई प्रकार की विद्याओं को जानने वाले होंगे। आप परंपरागत और कुल के देवी देवताओं को मान्यता देते हैं। वस्त्र और धन से आपका भंडार भरा रहेगा।

आप विद्वान, यशस्वी, गुरुभक्त, बन्धुमान्य, राजाओं द्वारा पूजित और कृतज्ञ व्यक्ति होंगे। दान पुण्य आदि कार्यों में आपकी गहरी रुचि होगी। आप धर्म, नम्रता, सौंदर्य, दया और परोपकार आदि गुणों से परिपूर्ण होंगे। सदाचार युक्त चरित्र होने पर आपका उज्ज्वल यश दूरदूर तक फैलेगा। आप चांदी, सीसा, रत्नो आदि के व्यापार के अलावा किसी विशेष गुण या विद्या के माध्यम से भी धन कमा सकते हैं।

उत्तम और स्वादिष्ट भोजन आपको खाने को मिलता रहेगा। आप विभिन्न प्रकार के खेलों और मनोरंजन के कार्यक्रमों में भाग लेंगे। लेकिन आप विलासी प्रकृति के हो सकते हैं। हांलाकि इसी गुण के कारण आप स्त्रियों के प्रिय बने रहेंगे। सौंदर्य सम्पन्न लोगों और वस्तुओं से आपका रिश्ता जुड़ा रहेगा। आपको उत्तम वाहनों के साथसाथ उत्तम वस्त्र, अलंकार और धन की भी प्राप्ति होती रहेगी।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि मेष राशि में स्थित है, जो कि शनि की नीच राशि है। शनि आठवें, नौवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में ग्यारहवें घर में स्थित है। शनिदृष्टि पहले, पांचवें, आठवें घरावर आहे मंगल की पूर्ण दृष्टि शनि पर है।

यहां स्थित शनि आपको अधिकांश मामलों में शुभफल देगा। आप दयालु, परोपकारे और मधुरभाषी व्यक्ति हैं। आप स्वभाव से संतोषी हैं। आप अपने शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त कर लेंगे। आप दीर्घायु, शूर वीर और स्थिर बुद्धि वाले व्यक्ति हैं। आप भाग्यवान, भोगी, विचारशील तथा संतोषी व्यक्ति हैं। आप विभिन्न विद्याओं को जानने वाले सर्वमान्य व्यक्ति हैं।

आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति होंगे। आपको कोई दीर्घकालिक रोग नहीं होंगे। अर्थात् यदि आपको कोई रोग होंगे तो वो शीघ्र ही ठीक हो जाएंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति होगी। राजा या सरकार की कृपा से भी आपको प्रचुर मात्रा में धनसम्पत्ति मिलेगी। पंडितों और विद्वानों से भी आप लाभान्वित होंगे।

आपको अच्छेअच्छे वाहनों का सुख मिलेगा। आप खूब धन की प्राप्ति करेंगे और खूब धन संचय भी करेंगे। यहां स्थित शनि आपको यशस्वी बनाता है, साथ ही आपको अच्छे मित्रों की संगति भी देता है। आप अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करेंगे। आपके घर में कई नौकर चाकर होंगे। लेकिन संतान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपको प्रपंच और कपट कर्म न करने की सलाह दी जाती है।

राहू विचार

आपकी कुण्डली में राहू कर्क राशि में स्थित है। राहू दूसरे घर में स्थित है। राहूदृष्टि छठे, आठवें, दसवें घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि राहू पर है।

इस भाव में स्थित राहू आपको शुभ और अशुभ दोनों तरह के फल देगा। आपके ठोडी पर कोई निशान हो सकता है। आप की नाक अपेक्षाकृत बड़ी होनी चाहिए। लोग आप पर विश्वास करेंगे भले ही आप उनके विश्वास पर खरे न उतर पाएं हालांकि कि आप बहुत हद तक व्यवहार कुशल होंगे। यह स्थिति आपको धनवान बनाने की संकेतक है। राजा या सरकार के माध्यम से आपको धन की प्राप्ति होगी।

आप सुखी रहेंगे। आप अपने जीवनकाल में गौरव और आदर प्राप्त करेंगे। आपको विदेश से भी धन मिलेगा। कहा गया कि यहां का राहू विदेश में धनार्जन करने में सहायता करता है। आप अपने शत्रुओं का विनाश करने में समर्थ होंगे। आपको देशविदेश में घूमने का खूब शौक होगा। लेकिन आपके कामों अक्सर रुकावटें आ सकती हैं।

संतान कम संख्या में होती हैं। यहां स्थित राहू आपके कामों में स्थिरता लाने में व्यवधान उत्पन्न करता है। आप झूठ बोलने में अधिक विश्वास कर सकते हैं। व्यर्थ बोलने की आदत हो सकती है। वाणी में किसी प्रकार का दोष हो सकता है। किसी अखाद्य य अपेय का सेवन कर सकते हैं। पैतृक सम्पदा का विनाश कर सकते हैं। पैसों का दुरुपयोग कर सकते हैं। कुपात्रों पर धन खर्च कर सकते हैं।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु मकर राशि में स्थित है। केतु आठवें घर में स्थित है। केतुदृष्टि बारहवें, दूसरे, चौथे घरावर आहे चन्द्र,मंगल,शुक्र,शनि,राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

यहां स्थित केतू के कुछ शुभ फल कहे गए हैं। अतः आप पराक्रमी और सदैव उद्यम करने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप अपने कामों के प्रति गंभीर रहते हैं। खेलकूद में भी आपकी गहरी रुचि होगी। आप सुखी रहेंगे। आप शीलवान व्यक्ति हैं। आपको खूब धनलाभ होगा। कई मामलों में आपको सरकार से भी धन की प्राप्ति हो सकती है।

अधिकांश मामलों में यहां स्थित केतू को अशुभफल देने वाला माना गया है। अतः आपको दुष्टजनों की संगति अधिक प्रिय होगी। आप लोभी और चालाक हो सकते हैं। किसी व्यक्ति को कष्ट पहुंचाने में आपको कोई हिचक नहीं होगी। आप जाने अंजाने कुछ ऐसे काम कर सकते हैं जो पाप संज्ञक हो सकते हैं। कभीकभी आपके द्वारा किए कार्यों से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है।

यहां स्थित केतू आपको गुहारोग, मुखरोग या दंत रोग देता है। यह स्थिति आर्थिक मामलों के लिए अच्छी नहीं होती। दूसरों को दिए हुए अपने द्रव्य को मिलने में रुकावट होती है। धन आगमन में व्यवधान आता है। दूसरों के धन और जन के प्रति आशक्ति हो सकती है। वाहन आदि के माध्यम से कष्ट मिल सकता है। मित्रों से विवाद या अलगाव भी हो सकता है।

॥ शोडषवर्ग तालिका ॥

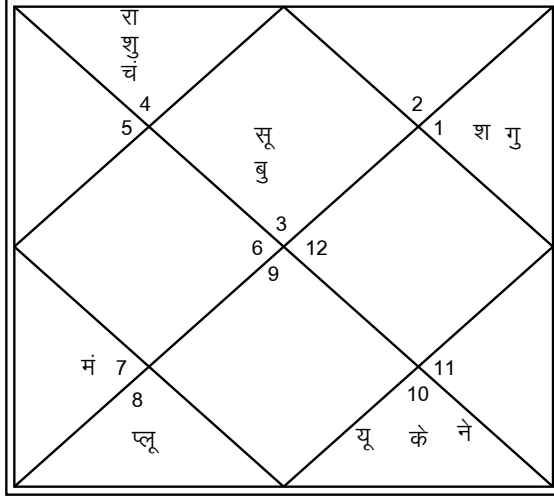
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	3	3	4	7	3	1	4	1	4	10	10	10	8
2	होरा	4	5	4	5	4	5	5	4	5	5	5	4	4
3	द्रेष्काण	11	3	4	7	11	1	8	5	12	6	6	2	12
4	चतुर्थांश	9	3	4	7	9	1	10	7	10	4	7	1	11
5	सप्तमांश	7	3	10	7	8	1	1	5	2	8	9	6	5
6	नवमांश	1	7	4	7	1	2	8	6	10	4	4	1	8
7	दशमांश	10	3	12	7	10	2	5	7	7	1	1	9	8
8	द्वादशांश	11	3	4	7	11	2	10	8	12	6	7	2	1
9	षोडशांश	8	9	1	1	8	3	9	11	12	12	1	6	12
10	विंशांश	7	5	2	1	7	3	11	1	3	3	4	7	6
11	चतुर्विंशांश	10	5	5	6	10	8	4	8	9	9	10	12	3
12	सप्तविंशांश	2	7	11	8	2	4	12	5	5	11	12	1	11
13	त्रिंशांश	3	1	2	1	3	1	12	3	10	10	10	6	12
14	खवेदांश	5	1	9	2	6	6	4	2	12	12	1	8	2
15	अक्षवेदांश	4	9	3	3	6	7	12	5	9	9	11	4	3
16	षष्ट्यंश	9	4	7	9	11	9	11	2	11	5	7	6	1

शोडषवर्ग भाव तालिका

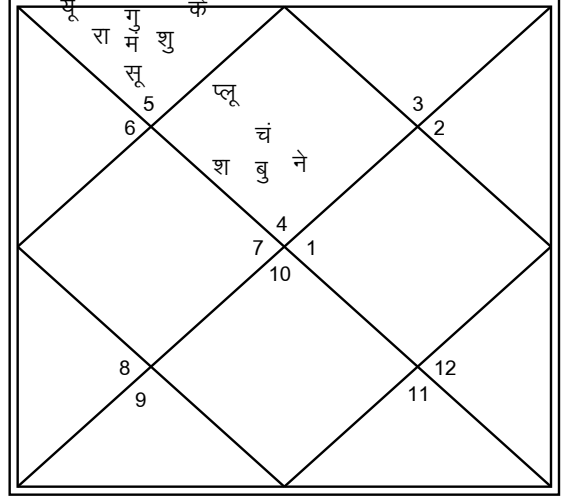
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	1	1	2	5	1	11	2	11	2	8	8	8	6
2	होरा	1	2	1	2	1	2	2	1	2	2	2	1	1
3	द्रेष्काण	1	5	6	9	1	3	10	7	2	8	8	4	2
4	चतुर्थांश	1	7	8	11	1	5	2	11	2	8	11	5	3
5	सप्तमांश	1	9	4	1	2	7	7	11	8	2	3	12	11
6	नवमांश	1	7	4	7	1	2	8	6	10	4	4	1	8
7	दशमांश	1	6	3	10	1	5	8	10	10	4	4	12	11
8	द्वादशांश	1	5	6	9	1	4	12	10	2	8	9	4	3
9	षोडशांश	1	2	6	6	1	8	2	4	5	5	6	11	5
10	विंशांश	1	11	8	7	1	9	5	7	9	9	10	1	12
11	चतुर्विंशांश	1	8	8	9	1	11	7	11	12	12	1	3	6
12	सप्तविंशांश	1	6	10	7	1	3	11	4	4	10	11	12	10
13	त्रिंशांश	1	11	12	11	1	11	10	1	8	8	8	4	10
14	खवेदांश	1	9	5	10	2	2	12	10	8	8	9	4	10
15	अक्षवेदांश	1	6	12	12	3	4	9	2	6	6	8	1	12
16	षष्ट्यंश	1	8	11	1	3	1	3	6	3	9	11	10	5

॥ शोडशवर्ग कुण्डलियाँ ॥

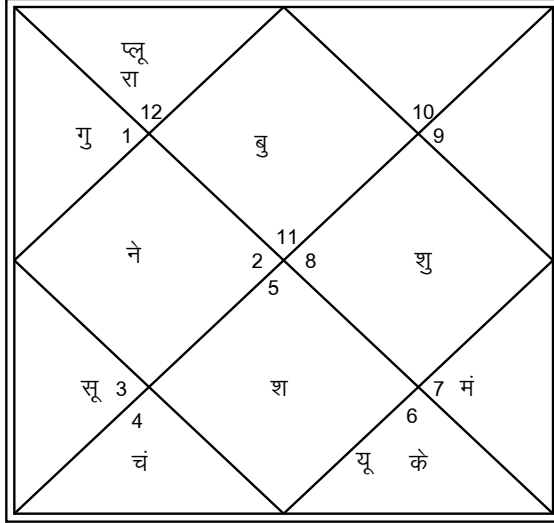
लग्न चक्र



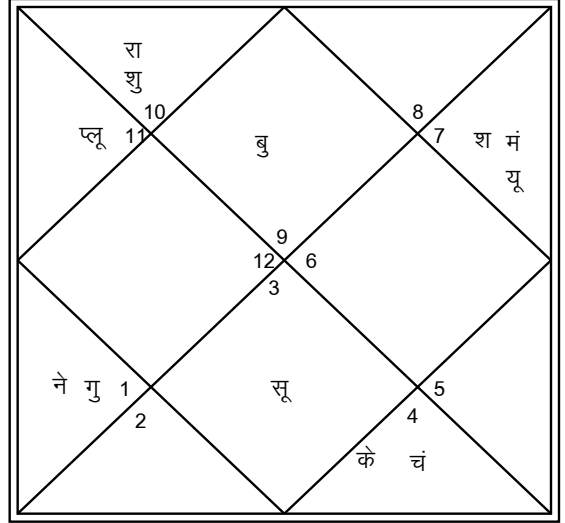
होरा-धन-सम्पत्ति



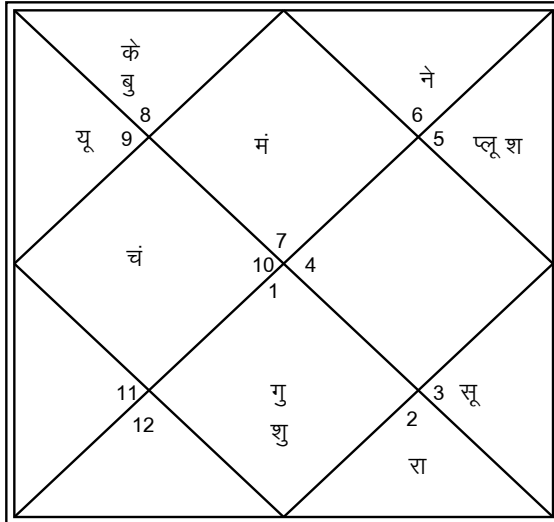
द्रेष्काण-भाई-बहन



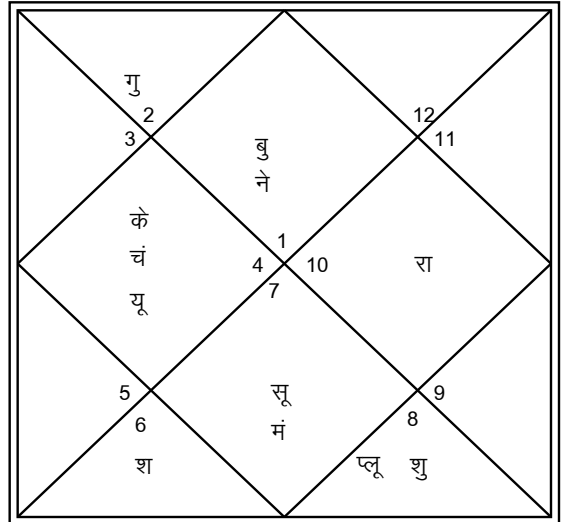
चतुर्थाश-भाग्य



सप्तमांश-बच्चे

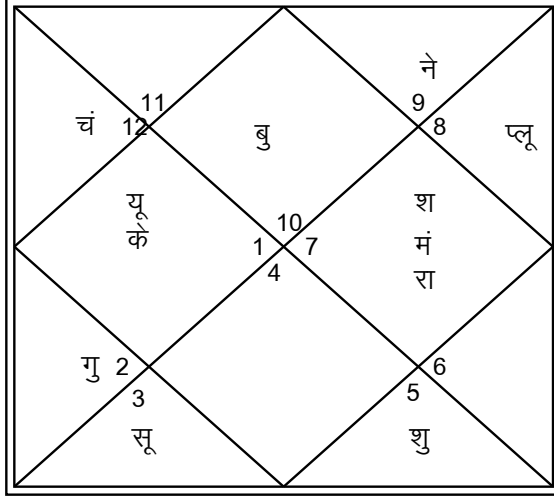


नवमांश-पति-पत्नी

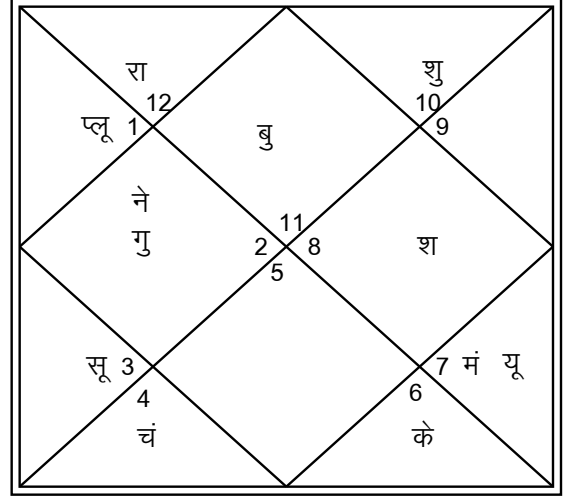


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

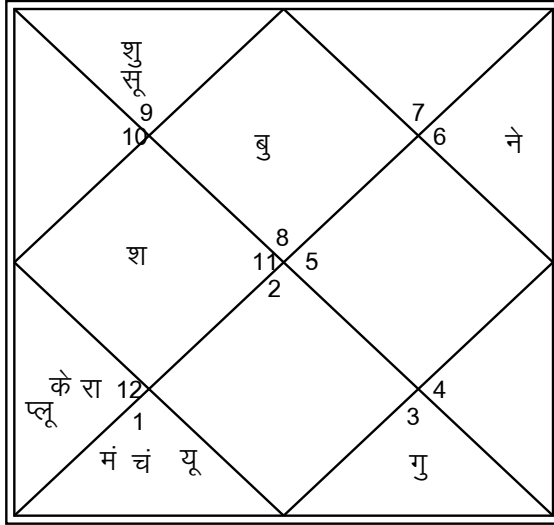
दशमांश-व्यवसाय



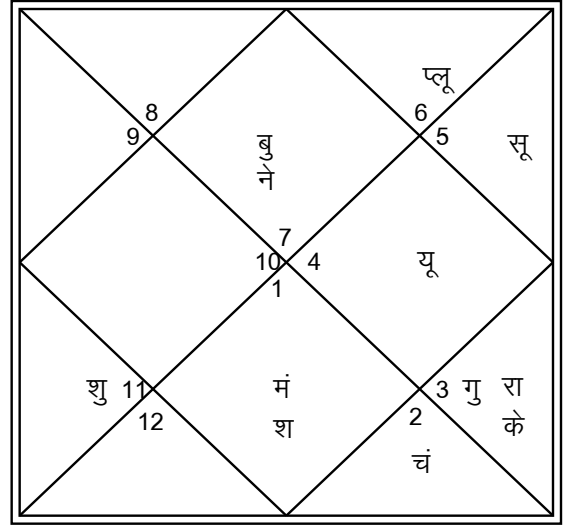
द्वादशांश-माता-पिता



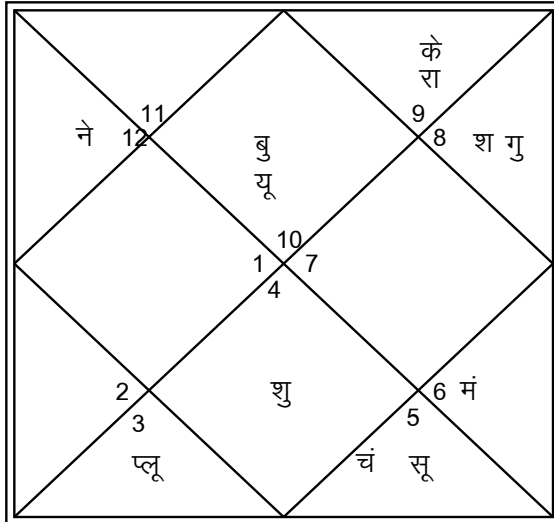
षोडशांश-वाहन



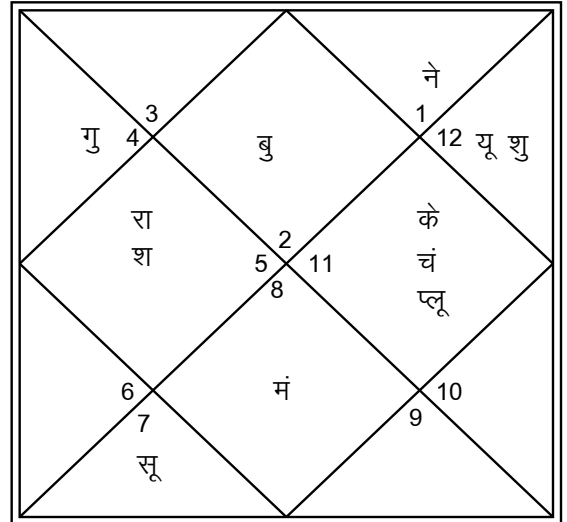
विंशांश-धार्मिक रुचि



सप्तविंशांश-बल

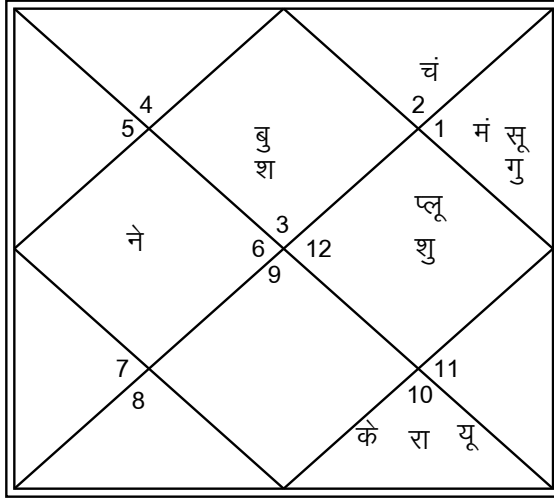


चतुर्विंशांश-शिक्षा

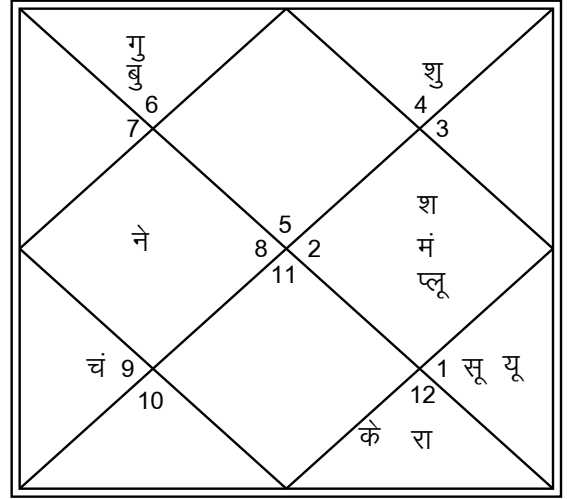


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

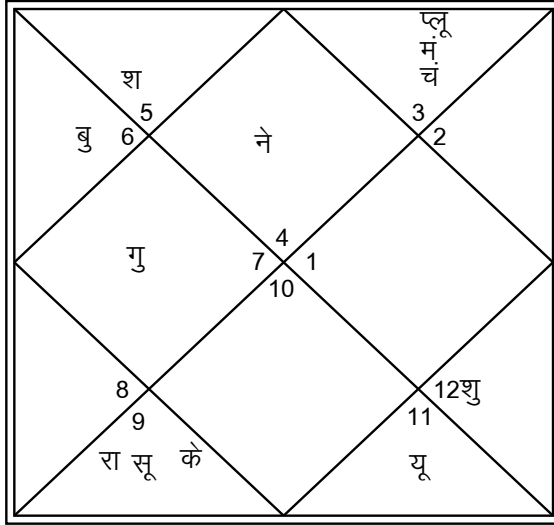
त्रिंशंश-दुर्भाग्य



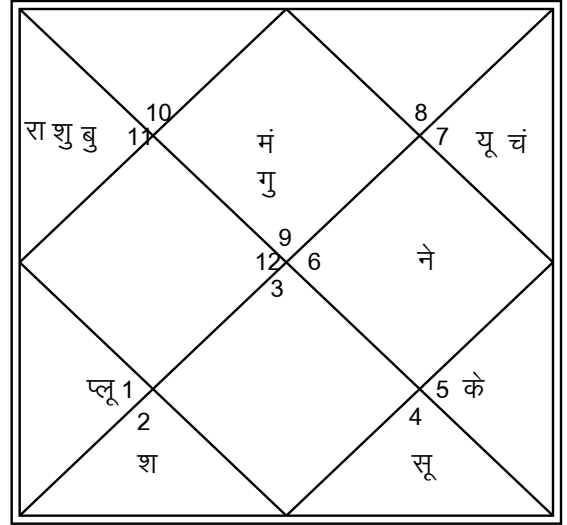
खवेदांश-शुभ फल



अक्षवेदांश-सामान्य जीवन



षष्ट्यंश-सामान्य जीवन



 **एस्ट्रोसेज
शॉप**

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी

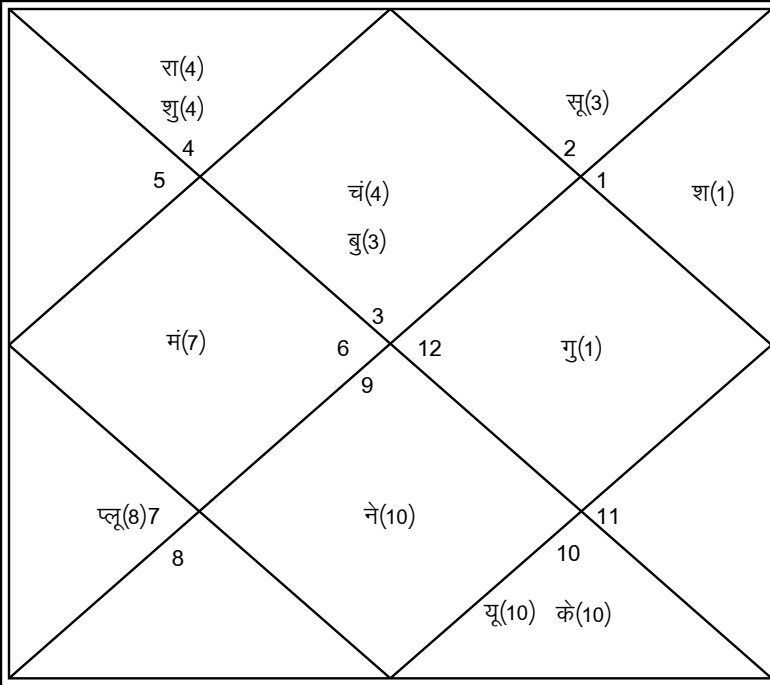


परामर्श



॥ केपी पद्धति ॥

नाम	Kaushik Biswas			सूर्योदय	04. 49. 37	दशा भोग्य	xq: 1 o 8 ek 13 fn
लिंग	Male	रेखांश	88.34.E	तिथि	तृतिया	सूर्यास्त	18. 22. 53
दिनांक	16.6.1999	अक्षांश	23.10.N	योग	ध्रुव	करण	गर
दिन	बुधवार	जन्म स्थान	Ranaghat	लग्न	मिथुन	लग्न स्वामी	बुध
समय	6.25.0	अयनांश	023-45-32	राशि	कर्क	राशि स्वामी	चंद्र
साम्पातिक काल	00.24.41	अयनांश नाम	के.पी. नया	नक्षत्र	पुनर्वसु-4	नक्षत्र स्वामी	गुरु



शासक ग्रह	राशि स्वामी	नक्षत्र	सब स्वामी
लग्न	बुध	गुरु	गुरु
चन्द्र	चंद्र	गुरु	राहु
दिन स्वामी		बुध	

भाव स्थिति	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
1	081.22.23	बुध	गुरु	गुरु	चंद्र
2	105.18.42	चंद्र	शनि	गुरु	शनि
3	131.58.42	सूर्य	केतु	बुध	शुक्र
4	162.57.47	बुध	चंद्र	राहु	बुध
5	197.02.51	शुक्र	राहु	शुक्र	बुध
6	230.33.33	मंगल	बुध	शुक्र	गुरु
7	261.22.23	गुरु	शुक्र	गुरु	चंद्र
8	285.18.42	शनि	चंद्र	गुरु	मंगल
9	311.58.42	शनि	राहु	शनि	राहु
10	342.57.47	गुरु	शनि	राहु	राहु
11	017.02.51	मंगल	शुक्र	चंद्र	केतु
12	050.33.33	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र

ग्रह स्थिति	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
सूर्य	060.43.23	बुध	मंगल	बुध	सूर्य
चन्द्र	091.54.51	चंद्र	गुरु	राहु	शनि
मंगल	181.35.06	शुक्र	मंगल	बुध	गुरु
बुध	082.08.01	बुध	गुरु	शनि	बुध
गुरु	004.08.21	मंगल	केतु	चंद्र	शनि
शुक्र	105.59.50	चंद्र	शनि	गुरु	शुक्र
शनि	018.58.26	मंगल	शुक्र	राहु	शनि
राहु	111.50.35	चंद्र	बुध	सूर्य	गुरु
केतु	291.50.35	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरु
अरुण	292.52.26	शनि	चंद्र	सूर्य	राहु
वरुण	280.07.27	शनि	चंद्र	चंद्र	मंगल
यम	224.51.40	मंगल	शनि	राहु	मंगल

घर के कारक ग्रह	भाव	ग्रह
1	चं	बु
2	चं	शु
3	सू	
4	सू	मं
5	शु	श
6	सू	मं
7	चं	बु
8	गु	शु
9	शु	श
10	चं	बु
11	सू	मं
12	सू	शु

ग्रह कारकत्व	ग्रह	भाव
सूर्य	3	4
चन्द्र	1	2
मंगल	4	6
बुध	1	4
गुरु	7	8
शुक्र	2	5
शनि	2	5
राहु	1	2
केतु	1	2

गुरु -16 वर्ष	16/ 6/99 से 2/ 3/01
गुरु	00/00/00
शनि	00/00/00
बुध	00/00/00
केतु	00/00/00
शुक्र	00/00/00
सूर्य	00/00/00
चंद्र	00/00/00
मंगल	00/00/00
राहु	2/3/01

शनि -19 वर्ष	2/ 3/01 से 2/ 3/20
शनि	3/3/04
बुध	12/11/06
केतु	21/12/07
शुक्र	21/2/11
सूर्य	3/2/12
चंद्र	3/9/13
मंगल	12/10/14
राहु	18/8/17
गुरु	2/3/20

बुध -17 वर्ष	2/ 3/20 से 2/ 3/37
बुध	27/7/22
केतु	24/7/23
शुक्र	24/5/26
सूर्य	30/3/27
चंद्र	30/8/28
मंगल	27/8/29
राहु	15/3/32
गुरु	21/6/34
शनि	2/3/37

केतु -7 वर्ष	2/ 3/37 से 2/ 3/44
केतु	27/7/37
शुक्र	27/9/38
सूर्य	3/2/39
चंद्र	3/9/39
मंगल	30/1/40
राहु	18/2/41
गुरु	24/1/42
शनि	3/3/43
बुध	2/3/44

शुक्र -20 वर्ष	2/ 3/44 से 2/ 3/64
शुक्र	30/6/47
सूर्य	30/6/48
चंद्र	2/3/50
मंगल	30/4/51
राहु	30/4/54
गुरु	30/12/56
शनि	2/3/60
बुध	30/12/62
केतु	2/3/64

सूर्य -8 वर्ष	2/ 3/64 से 2/ 3/70
सूर्य	18/6/64
चंद्र	18/12/64
मंगल	24/4/65
राहु	18/3/66
गुरु	6/1/67
शनि	18/12/67
बुध	24/10/68
केतु	2/3/69
शुक्र	2/3/70

चंद्र -10 वर्ष	2/ 3/70 से 2/ 3/80
चंद्र	30/12/70
मंगल	30/7/71
राहु	30/1/73
गुरु	30/5/74
शनि	30/12/75
बुध	30/5/77
केतु	30/12/77
शुक्र	30/8/79
सूर्य	2/3/80

मंगल -7 वर्ष	2/ 3/80 से 2/ 3/87
मंगल	27/7/80
राहु	15/8/81
गुरु	21/7/82
शनि	30/8/83
बुध	27/8/84
केतु	24/1/85
शुक्र	24/3/86
सूर्य	30/7/86
चंद्र	2/3/87

राहु -18 वर्ष	2/ 3/87 से 2/ 3/05
राहु	12/11/89
गुरु	6/4/92
शनि	12/2/95
बुध	30/8/97
केतु	18/9/98
शुक्र	18/9/01
सूर्य	12/8/02
चंद्र	12/2/04
मंगल	2/3/05

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

गुरु — राहु 16/ 6/99 से 2/ 3/01		शनि — शनि 2/ 3/01 से 3/ 3/04		शनि — बुध 3/ 3/04 से 12/11/06		शनि — केतु 12/11/06 से 21/12/07		शनि — शुक्र 21/12/07 से 21/ 2/11	
राहु	00/00/00	शनि	21/8/01	बुध	20/7/04	केतु	5/12/06	शुक्र	1/7/08
गुरु	00/00/00	बुध	24/1/02	केतु	16/9/04	शुक्र	11/2/07	सूर्य	28/8/08
शनि	27/10/99	केतु	28/3/02	शुक्र	28/2/05	सूर्य	1/3/07	चंद्र	3/12/08
बुध	2/3/00	शुक्र	28/9/02	सूर्य	16/4/05	चंद्र	5/4/07	मंगल	9/2/09
केतु	20/4/00	सूर्य	22/11/02	चंद्र	7/7/05	मंगल	28/4/07	राहु	30/7/09
शुक्र	14/9/00	चंद्र	23/2/03	मंगल	4/9/05	राहु	28/6/07	गुरु	2/1/10
सूर्य	27/10/00	मंगल	26/4/03	राहु	29/1/06	गुरु	21/8/07	शनि	3/7/10
चंद्र	9/1/01	राहु	8/10/03	गुरु	8/6/06	शनि	24/10/07	बुध	14/12/10
मंगल	2/3/01	गुरु	3/3/04	शनि	12/11/06	बुध	21/12/07	केतु	21/2/11

शनि — सूर्य 21/ 2/11 से 3/ 2/12		शनि — चंद्र 3/ 2/12 से 3/ 9/13		शनि — मंगल 3/ 9/13 से 12/10/14		शनि — राहु 12/10/14 से 18/ 8/17		शनि — गुरु 18/ 8/17 से 2/ 3/20	
सूर्य	8/3/11	चंद्र	20/3/12	मंगल	26/9/13	राहु	15/3/15	गुरु	19/12/17
चंद्र	6/4/11	मंगल	23/4/12	राहु	26/11/13	गुरु	2/8/15	शनि	14/5/18
मंगल	26/4/11	राहु	19/7/12	गुरु	19/1/14	शनि	15/1/16	बुध	23/9/18
राहु	17/6/11	गुरु	5/10/12	शनि	22/3/14	बुध	10/6/16	केतु	16/11/18
गुरु	3/8/11	शनि	5/1/13	बुध	19/5/14	केतु	10/8/16	शुक्र	18/4/19
शनि	27/9/11	बुध	26/3/13	केतु	12/6/14	शुक्र	1/2/17	सूर्य	4/6/19
बुध	16/11/11	केतु	29/4/13	शुक्र	18/8/14	सूर्य	22/3/17	चंद्र	20/8/19
केतु	6/12/11	शुक्र	4/8/13	सूर्य	8/9/14	चंद्र	18/6/17	मंगल	13/10/19
शुक्र	3/2/12	सूर्य	3/9/13	चंद्र	12/10/14	मंगल	18/8/17	राहु	2/3/20

बुध — बुध 2/ 3/20 से 27/ 7/22		बुध — केतु 27/ 7/22 से 24/ 7/23		बुध — शुक्र 24/ 7/23 से 24/ 5/26		बुध — सूर्य 24/ 5/26 से 30/ 3/27		बुध — चंद्र 30/ 3/27 से 30/ 8/28	
बुध	2/7/20	केतु	17/8/22	शुक्र	14/1/24	सूर्य	9/6/26	चंद्र	12/5/27
केतु	23/8/20	शुक्र	17/10/22	सूर्य	5/3/24	चंद्र	4/7/26	मंगल	12/6/27
शुक्र	17/1/21	सूर्य	5/11/22	चंद्र	30/5/24	मंगल	22/7/26	राहु	28/8/27
सूर्य	1/3/21	चंद्र	4/12/22	मंगल	29/7/24	राहु	8/9/26	गुरु	6/11/27
चंद्र	13/5/21	मंगल	25/12/22	राहु	2/1/25	गुरु	19/10/26	शनि	27/1/28
मंगल	4/7/21	राहु	19/2/23	गुरु	18/5/25	शनि	7/12/26	बुध	9/4/28
राहु	14/11/21	गुरु	6/4/23	शनि	30/10/25	बुध	21/1/27	केतु	9/5/28
गुरु	9/3/22	शनि	3/6/23	बुध	24/3/26	केतु	9/2/27	शुक्र	4/8/28
शनि	27/7/22	बुध	24/7/23	केतु	24/5/26	शुक्र	30/3/27	सूर्य	30/8/28

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

बुध — मंगल 30/ 8/28 से 27/ 8/29		बुध — राहु 27/ 8/29 से 15/ 3/32		बुध — गुरु 15/ 3/32 से 21/ 6/34		बुध — शनि 21/ 6/34 से 2/ 3/37		केतु — केतु 2/ 3/37 से 27/ 7/37	
मंगल	20/9/28	राहु	14/1/30	गुरु	3/7/32	शनि	24/11/34	केतु	8/3/37
राहु	14/11/28	गुरु	17/5/30	शनि	13/11/32	बुध	11/4/35	शुक्र	3/4/37
गुरु	2/1/29	शनि	12/10/30	बुध	8/3/33	केतु	8/6/35	सूर्य	10/4/37
शनि	28/2/29	बुध	22/2/31	केतु	26/4/33	शुक्र	19/11/35	चंद्र	22/4/37
बुध	19/4/29	केतु	16/4/31	शुक्र	12/9/33	सूर्य	8/1/36	मंगल	1/5/37
केतु	9/5/29	शुक्र	19/9/31	सूर्य	23/10/33	चंद्र	28/3/36	राहु	23/5/37
शुक्र	9/7/29	सूर्य	4/11/31	चंद्र	1/1/34	मंगल	25/5/36	गुरु	12/6/37
सूर्य	27/7/29	चंद्र	21/1/32	मंगल	18/2/34	राहु	20/10/36	शनि	6/7/37
चंद्र	27/8/29	मंगल	15/3/32	राहु	21/6/34	गुरु	2/3/37	बुध	27/7/37

केतु — शुक्र 27/ 7/37 से 27/ 9/38		केतु — सूर्य 27/ 9/38 से 3/ 2/39		केतु — चंद्र 3/ 2/39 से 3/ 9/39		केतु — मंगल 3/ 9/39 से 30/ 1/40		केतु — राहु 30/ 1/40 से 18/ 2/41	
शुक्र	7/10/37	सूर्य	3/10/38	चंद्र	20/2/39	मंगल	11/9/39	राहु	26/3/40
सूर्य	28/10/37	चंद्र	13/10/38	मंगल	2/3/39	राहु	3/10/39	गुरु	17/5/40
चंद्र	3/12/37	मंगल	21/10/38	राहु	4/4/39	गुरु	23/10/39	शनि	16/7/40
मंगल	27/12/37	राहु	10/11/38	गुरु	2/5/39	शनि	16/11/39	बुध	10/9/40
राहु	2/3/38	गुरु	26/11/38	शनि	5/6/39	बुध	7/12/39	केतु	2/10/40
गुरु	26/4/38	शनि	16/12/38	बुध	5/7/39	केतु	15/12/39	शुक्र	5/12/40
शनि	3/7/38	बुध	4/1/39	केतु	17/7/39	शुक्र	10/1/40	सूर्य	24/12/40
बुध	2/9/38	केतु	12/1/39	शुक्र	22/8/39	सूर्य	17/1/40	चंद्र	25/1/41
केतु	27/9/38	शुक्र	3/2/39	सूर्य	3/9/39	चंद्र	30/1/40	मंगल	18/2/41

केतु — गुरु 18/ 2/41 से 24/ 1/42		केतु — शनि 24/ 1/42 से 3/ 3/43		केतु — बुध 3/ 3/43 से 2/ 3/44		शुक्र — शुक्र 2/ 3/44 से 30/ 6/47		शुक्र — सूर्य 30/ 6/47 से 30/ 6/48	
गुरु	2/4/41	शनि	27/3/42	बुध	23/4/43	शुक्र	20/9/44	सूर्य	18/7/47
शनि	26/5/41	बुध	23/5/42	केतु	14/5/43	सूर्य	20/11/44	चंद्र	18/8/47
बुध	13/7/41	केतु	17/6/42	शुक्र	13/7/43	चंद्र	2/3/45	मंगल	9/9/47
केतु	3/8/41	शुक्र	23/8/42	सूर्य	1/8/43	मंगल	10/5/45	राहु	3/11/47
शुक्र	29/9/41	सूर्य	13/9/42	चंद्र	1/9/43	राहु	10/11/45	गुरु	21/12/47
सूर्य	16/10/41	चंद्र	16/10/42	मंगल	22/9/43	गुरु	20/4/46	शनि	18/2/48
चंद्र	14/11/41	मंगल	9/11/42	राहु	15/11/43	शनि	30/10/46	बुध	9/4/48
मंगल	3/12/41	राहु	9/1/43	गुरु	3/1/44	बुध	20/4/47	केतु	30/4/48
राहु	24/1/42	गुरु	3/3/43	शनि	2/3/44	केतु	30/6/47	शुक्र	30/6/48

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

शुक्र — चंद्र 30/ 6/48 से 2/ 3/50		शुक्र — मंगल 2/ 3/50 से 30/ 4/51		शुक्र — राहु 30/ 4/51 से 30/ 4/54		शुक्र — गुरु 30/ 4/54 से 30/12/56		शुक्र — शनि 30/12/56 से 2/ 3/60	
चंद्र	20/ 8/48	मंगल	24/ 3/50	राहु	12/10/51	गुरु	8/ 9/54	शनि	30/ 6/57
मंगल	25/ 9/48	राहु	27/ 5/50	गुरु	6/ 3/52	शनि	10/ 2/55	बुध	12/12/57
राहु	25/12/48	गुरु	23/ 7/50	शनि	27/ 8/52	बुध	26/ 6/55	केतु	18/ 2/58
गुरु	15/ 3/49	शनि	30/ 9/50	बुध	30/ 1/53	केतु	22/ 8/55	शुक्र	28/ 8/58
शनि	20/ 6/49	बुध	29/11/50	केतु	3/ 4/53	शुक्र	2/ 2/56	सूर्य	25/10/58
बुध	15/ 9/49	केतु	24/12/50	शुक्र	3/10/53	सूर्य	20/ 3/56	चंद्र	30/ 1/59
केतु	20/10/49	शुक्र	4/ 3/51	सूर्य	27/11/53	चंद्र	10/ 6/56	मंगल	7/ 4/59
शुक्र	30/ 1/50	सूर्य	25/ 3/51	चंद्र	27/ 2/54	मंगल	6/ 8/56	राहु	28/ 9/59
सूर्य	2/ 3/50	चंद्र	30/ 4/51	मंगल	30/ 4/54	राहु	30/12/56	गुरु	2/ 3/60

शुक्र — बुध 2/ 3/60 से 30/12/62		शुक्र — केतु 30/12/62 से 2/ 3/64		सूर्य — सूर्य 2/ 3/64 से 18/ 6/64		सूर्य — चंद्र 18/ 6/64 से 18/12/64		सूर्य — मंगल 18/12/64 से 24/ 4/65	
बुध	24/ 7/60	केतु	24/ 1/63	सूर्य	5/ 3/64	चंद्र	3/ 7/64	मंगल	25/12/64
केतु	24/ 9/60	शुक्र	4/ 4/63	चंद्र	14/ 3/64	मंगल	13/ 7/64	राहु	14/ 1/65
शुक्र	14/ 3/61	सूर्य	25/ 4/63	मंगल	20/ 3/64	राहु	10/ 8/64	गुरु	1/ 2/65
सूर्य	5/ 5/61	चंद्र	30/ 5/63	राहु	6/ 4/64	गुरु	4/ 9/64	शनि	21/ 2/65
चंद्र	30/ 7/61	मंगल	25/ 6/63	गुरु	21/ 4/64	शनि	3/10/64	बुध	8/ 3/65
मंगल	29/ 9/61	राहु	28/ 8/63	शनि	8/ 5/64	बुध	28/10/64	केतु	16/ 3/65
राहु	2/ 3/62	गुरु	24/10/63	बुध	23/ 5/64	केतु	9/11/64	शुक्र	7/ 4/65
गुरु	18/ 7/62	शनि	30/12/63	केतु	30/ 5/64	शुक्र	9/12/64	सूर्य	13/ 4/65
शनि	30/12/62	बुध	2/ 3/64	शुक्र	18/ 6/64	सूर्य	18/12/64	चंद्र	24/ 4/65

सूर्य — राहु 24/ 4/65 से 18/ 3/66		सूर्य — गुरु 18/ 3/66 से 6/ 1/67		सूर्य — शनि 6/ 1/67 से 18/12/67		सूर्य — बुध 18/12/67 से 24/10/68		सूर्य — केतु 24/10/68 से 2/ 3/69	
राहु	12/ 6/65	गुरु	26/ 4/66	शनि	2/ 3/67	बुध	1/ 2/68	केतु	1/11/68
गुरु	25/ 7/65	शनि	12/ 6/66	बुध	18/ 4/67	केतु	19/ 2/68	शुक्र	22/11/68
शनि	17/ 9/65	बुध	22/ 7/66	केतु	8/ 5/67	शुक्र	10/ 4/68	सूर्य	28/11/68
बुध	3/11/65	केतु	9/ 8/66	शुक्र	5/ 7/67	सूर्य	25/ 4/68	चंद्र	9/12/68
केतु	21/11/65	शुक्र	27/ 9/66	सूर्य	22/ 7/67	चंद्र	21/ 5/68	मंगल	16/12/68
शुक्र	15/ 1/66	सूर्य	12/10/66	चंद्र	21/ 8/67	मंगल	8/ 6/68	राहु	5/ 1/69
सूर्य	2/ 2/66	चंद्र	6/11/66	मंगल	11/ 9/67	राहु	24/ 7/68	गुरु	22/ 1/69
चंद्र	1/ 3/66	मंगल	22/11/66	राहु	2/11/67	गुरु	5/ 9/68	शनि	12/ 2/69
मंगल	18/ 3/66	राहु	6/ 1/67	गुरु	18/12/67	शनि	24/10/68	बुध	2/ 3/69

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

सूर्य — शुक्र 2/ 3/69 से 2/ 3/70		चंद्र — चंद्र 2/ 3/70 से 30/12/70		चंद्र — मंगल 30/12/70 से 30/ 7/71		चंद्र — राहु 30/ 7/71 से 30/ 1/73		चंद्र — गुरु 30/ 1/73 से 30/ 5/74	
शुक्र	30/ 4/69	चंद्र	25/ 3/70	मंगल	12/ 1/71	राहु	21/10/71	गुरु	4/ 4/73
सूर्य	18/ 5/69	मंगल	12/ 4/70	राहु	13/ 2/71	गुरु	3/ 1/72	शनि	20/ 6/73
चंद्र	18/ 6/69	राहु	27/ 5/70	गुरु	11/ 3/71	शनि	28/ 3/72	बुध	28/ 8/73
मंगल	9/ 7/69	गुरु	7/ 7/70	शनि	15/ 4/71	बुध	15/ 6/72	केतु	26/ 9/73
राहु	3/ 9/69	शनि	25/ 8/70	बुध	14/ 5/71	केतु	16/ 7/72	शुक्र	16/12/73
गुरु	21/10/69	बुध	7/10/70	केतु	27/ 5/71	शुक्र	16/10/72	सूर्य	10/ 1/74
शनि	18/12/69	केतु	25/10/70	शुक्र	2/ 7/71	सूर्य	13/11/72	चंद्र	20/ 2/74
बुध	9/ 2/70	शुक्र	15/12/70	सूर्य	12/ 7/71	चंद्र	28/12/72	मंगल	18/ 3/74
केतु	2/ 3/70	सूर्य	30/12/70	चंद्र	30/ 7/71	मंगल	30/ 1/73	राहु	30/ 5/74

चंद्र — शनि 30/ 5/74 से 30/12/75		चंद्र — बुध 30/12/75 से 30/ 5/77		चंद्र — केतु 30/ 5/77 से 30/12/77		चंद्र — शुक्र 30/12/77 से 30/ 8/79		चंद्र — सूर्य 30/ 8/79 से 2/ 3/80	
शनि	30/ 8/74	बुध	12/ 3/76	केतु	12/ 6/77	शुक्र	10/ 4/78	सूर्य	9/ 9/79
बुध	21/11/74	केतु	12/ 4/76	शुक्र	17/ 7/77	सूर्य	10/ 5/78	चंद्र	24/ 9/79
केतु	24/12/74	शुक्र	7/ 7/76	सूर्य	27/ 7/77	चंद्र	30/ 6/78	मंगल	4/10/79
शुक्र	29/ 3/75	सूर्य	2/ 8/76	चंद्र	15/ 8/77	मंगल	5/ 8/78	राहु	1/11/79
सूर्य	27/ 4/75	चंद्र	15/ 9/76	मंगल	27/ 8/77	राहु	5/11/78	गुरु	25/11/79
चंद्र	15/ 6/75	मंगल	14/10/76	राहु	29/ 9/77	गुरु	25/ 1/79	शनि	24/12/79
मंगल	18/ 7/75	राहु	1/ 1/77	गुरु	27/10/77	शनि	30/ 4/79	बुध	19/ 1/80
राहु	14/10/75	गुरु	9/ 3/77	शनि	30/11/77	बुध	25/ 7/79	केतु	30/ 1/80
गुरु	30/12/75	शनि	30/ 5/77	बुध	30/12/77	केतु	30/ 8/79	शुक्र	2/ 3/80

॥ मैत्री चक्र ॥

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	...	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	...	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	...	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	...	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	...

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	...	मित्र	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	सम	अतिमित्र	...	अतिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु
बुध	सम	सम	शत्रु	...	मित्र	अतिमित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	...	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	...	अतिमित्र
शनि	सम	सम	अतिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	...

॥ षड्बल एवं भावबल तालिका ॥

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते हैं तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	43.12	40.39	21.17	32.35	29.68	23.7	0.37
सप्तवर्गज बल	60	183.75	112.5	120	67.5	91.88	71.25
ओजयुग्मरस्यांश बल	30	30	30	30	15	30	15
केन्द्र बल	60	30	30	60	30	30	30
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	208.12	284.14	208.67	242.35	157.18	175.57	131.62
कुल दिग्बल	34.08	36.32	6.21	59.75	34.26	41.01	20.8
नतोन्त बल	34.06	25.94	25.94	60	34.06	34.06	25.94
पक्ष बल	49.6	49.6	49.6	49.6	10.4	10.4	49.6
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	119.2	3.31	17.56	58.73	43.65	52.59	10.07
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	247.87	78.85	93.1	333.33	148.11	97.05	85.61
कुल चेष्टा बल	58.16	10.4	48.16	23.28	40.23	40.21	13.64
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	-9.5	-11.4	-13.46	-12.47	-15.17	-15.85	-11.46
कुल षड्बल	598.73	449.73	359.84	671.98	398.87	380.84	248.79
षड्बल (रुपस)	9.98	7.5	6	11.2	6.65	6.35	4.15
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	2	1.25	1.2	1.6	1.02	1.15	0.83
सापेक्षिक क्रम	1	3	4	2	6	5	7

भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	671.98	449.73	598.73	671.98	380.84	359.84	398.87	248.79	248.79	398.87	359.84	380.84
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	30	20	20	0	50	40
भावदृष्टि बल	11.61	11.53	19.41	-32.55	5.54	15.39	-42.45	-62.93	-52.65	-25.73	-14.65	-5.66
कुल भाव बल	743.58	501.25	628.14	669.43	406.38	425.24	386.42	205.86	216.14	373.14	395.19	415.18
कुल भाव बल (रुपस में)	12.39	8.35	10.47	11.16	6.77	7.09	6.44	3.43	3.6	6.22	6.59	6.92
सापेक्षिक क्रम	1	4	3	2	7	5	9	12	11	10	8	6

॥ ग्रह दृष्टि (पाश्चात्य) ॥

	सूर्य 60 43	चंद्र 91 54	मंगल 181 35	बुध 82 8	गुरु 4 8	शुक्र 105 59	शनि 18 58	राहु 111 50	केतु 291 50	अरुण 292 52	वरुण 280 7	यम 224 51
सूर्य 60. 43	पंच 2.57	अर्धद्वितीय 0.73
चंद्र 91. 54	चतुर्थ 2.84	युति 0.61	सप्त 4.53	..
मंगल 181. 35
बुध 82. 8	..	युति 3.48
गुरु 4. 8	तृती 1.29	चतुर्थ 1.89	सप्त 8.3	युति 0.11
शुक्र 105. 59	युति 6.1	सप्त 6.1	सप्त 5.42	सप्त 6.08	पंच 2.43
शनि 18. 58	..	पंचा 0.06	..	तृती 1.42	..	चतुर्थ 1.51	..	चतुर्थ 1.57
राहु 111. 50	सप्त 10.0	सप्त 9.31	सप्त 2.19	..
केतु 291. 50	युति 9.31
अरुण 292. 52
वरुण 280. 7	युति 2.19	युति 1.5
यम 224. 51	तृती 0.63	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. ग्रहों के नाम के नीचे ग्रहों के अंश व कला दिए गए हैं।

4. एप्पलाइंग दृष्टि के लिए बाएं से ऊपर देखें और सेपरेटिंग दृष्टि के लिए ऊपर से बाएं देखें।

॥ भावमध्य पर दृष्टि ॥

	1 81 22	2 108 34	3 135 45	4 162 57	5 195 45	6 228 34	7 261 22	8 288 34	9 315 45	10 342 57	11 15 45	12 48 34
सूर्य 60. 43	अष्टा 0.96	सप्त 1.9
चंद्र 91. 54	पंचा 0.05	सप्त 2.97
मंगल 181. 35	युति 0.55	अष्टा 0.18
बुध 82. 8	सप्त 9.49
गुरु 4. 8	सप्त 2.25	युति 2.25	अर्धद्वितीय 0.43
शुक्र 105. 59	..	युति 8.28	..	तृती 1.48	चतुर्थ 2.88	पंच 1.71	..	सप्त 8.28
शनि 18. 58	तृती 1.8	चतुर्थ 2.8	पंच 1.4	..	सप्त 7.86
राहु 111. 50	पंच 1.36	षष्ठ 0.53	सप्त 7.82
केतु 291. 50
अरुण 292. 52
वरुण 280. 7	युति 4.37	..	तृती 1.58
यम 224. 51	युति 7.53	..	तृती 1.15	चतुर्थ 2.55	पंच 2.05

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. चलित चक्र की भावमध्य अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की भाव मध्य पर एप्पलाइड दिखाई गई है।

॥ केपी संधि पर दृष्टि ॥

	1 81 22	2 105 18	3 131 58	4 162 57	5 197 2	6 230 33	7 261 22	8 285 18	9 311 58	10 342 57	11 17 2	12 50 33
सूर्य 60. 43	..	अर्धद्वितीय 0.59	पंचा 0.26	सप्त 3.22
चंद्र 91. 54	..	युति 1.07	नवां 0.94	पंचा 0.05	सप्त 2.97	सप्त 1.07
मंगल 181. 35
बुध 82. 8	पंच 0.46	..	सप्त 9.49
गुरु 4. 8	सप्त 1.39	युति 1.39	..
शुक्र 105. 59	तृती 1.48	चतुर्थ 2.47	पंच 0.72	..	सप्त 9.54
शनि 18. 58	तृती 1.8	चतुर्थ 1.17	सप्त 8.72
राहु 111. 50	चतुर्थ 0.6	पंच 2.36	षष्ठ 0.53	सप्त 5.65
केतु 291. 50
अरुण 292. 52
वरुण 280. 7	युति 6.54	..	तृती 1.58
यम 224. 51	युति 6.2	..	तृती 2.77	चतुर्थ 1.56	पंच 2.05

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

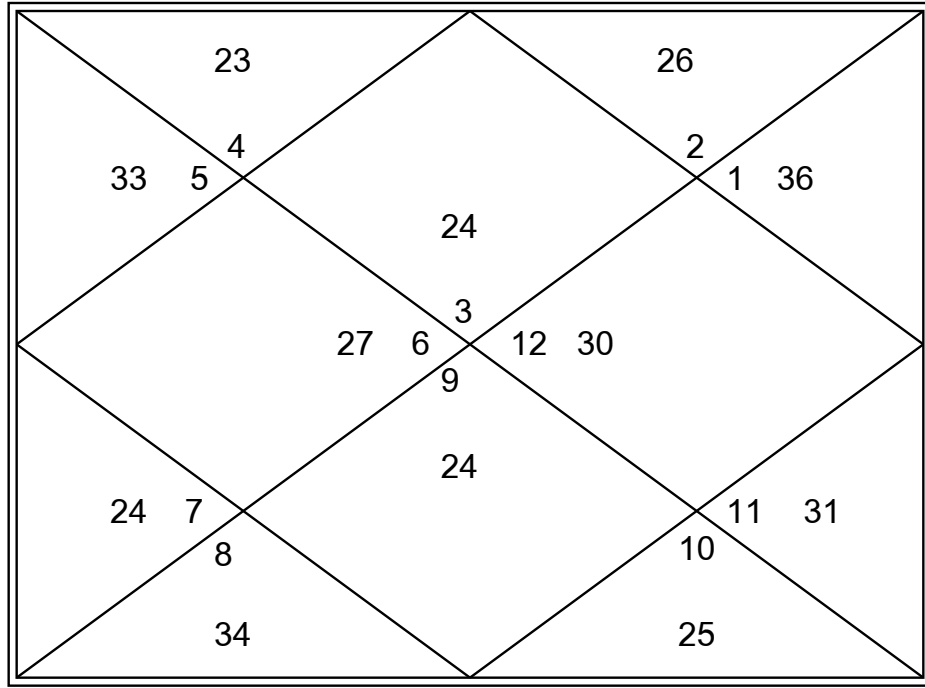
3. निरयन भाव चलित (केपी चक्र) के भाव प्रारम्भ अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की केपी भाव प्रारम्भ पर एप्पलाइड दृष्टि दिखाई गई है।

॥ अष्टकवर्ग तालिका ॥

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	6	5	3	3	4	4	3	4	5	4	4	3
चन्द्र	6	2	3	3	5	4	3	5	4	5	3	6
मंगल	5	3	2	2	4	2	4	5	3	3	3	3
बुध	6	6	3	4	4	3	6	7	2	3	6	4
गुरु	6	4	5	5	5	4	4	6	3	4	4	6
शुक्र	4	3	4	4	7	4	4	5	3	4	7	3
शनि	3	3	4	2	4	6	0	2	4	2	4	5
योग	36	26	24	23	33	27	24	34	24	25	31	30

अष्टकवर्ग चार्ट:



॥ प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ॥

सूर्य

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
चन्द्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
बुध	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	3
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
राहू	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
योग	6	5	3	3	4	4	3	4	5	4	4	3	

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
चन्द्र	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	6
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	7
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
राहू	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
योग	6	2	3	3	5	4	3	5	4	5	3	6	

मंगल

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
चन्द्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	7
राहू	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
योग	5	3	2	2	4	2	4	5	3	3	3	3	

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	5
चन्द्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
बुध	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
शुक्र	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
राहू	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
योग	6	6	3	4	4	3	6	7	2	3	6	4	

गुरु

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
चन्द्र	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	5
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
राहू	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
योग	6	4	5	5	5	4	4	6	3	4	4	6	

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
चन्द्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
शुक्र	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
राहू	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
योग	4	3	4	4	7	4	4	5	3	4	7	3	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
चन्द्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
राहू	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
योग	3	3	4	2	4	6	0	2	4	2	4	5	

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report are provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).